Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 7
अंक- 22

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

01 ज़ुल्क़ादा 1443 हिज्री कमरी, 02 अहसान 1401 हिज्री शम्सी, 02 जून 2022 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَالَّذِیۡنَ ھَادُوۡا وَالصّٰبِـُٔوۡنَ وَالنَّصٰرٰی مَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰہِ وَالۡیَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوۡفٌ عَلَیۡھِمۡ وَلَا ھُمۡ یَحۡزَنُوۡنَ ○

(अल् मायदा: 70)

अनुवाद : निसंदेह वे लोग जो ईमान लाए और जो यहूदी हुए और साबी और नसरानी जो भी अल्लाह पर ईमान लाया और यौम-ए-आख़िरत पर और नेक अमल बजा लाया उन पर कोई ख़ौफ़ नहीं और वे कोई ग़म नहीं करेंगे।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

समय की ज़रूरत के अनुसार माल ख़र्च करने और दूसरों को इलम सिखाने की फ़ज़ीलत

(1409) हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है उन्होंने कहा मैं ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे : रशक नहीं करना चाहिए परन्तु दो ही (व्यक्तियों) पर। एक वे व्यक्ति जिसको अल्लाह तआला ने माल दिया हो और फिर उसको अवसर के अनुसार ख़र्च करने की तौफ़ीक़ दे और वे व्यक्ति जिसको अल्लाह तआला ने सही इलम दिया हो और वे ख़ुद भी इस पर अमल करता है और लोगों को भी सिखाता है।

सदक़ा और ज़कात पवित्र माल से देना

(1410) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस व्यक्ति ने पाकीज़ा कमाई से एक खजूर के बराबर भी सदक़ा दिया और अल्लाह पाकीज़ा चीज़ ही क़बूल करता है और अल्लाह उस सदके को अपने दाएं हाथ से क़बूल करता है। फिर सदक़ा देने वाले के लिए इस को बढ़ाता है , इसी तरह जिस तरह कि तुम में से कोई अपना बिछड़ा पा लेता है। यहां तक कि वे (सदक़ा) पहाड़ के बराबर हो जाता है।

(सही बुख़ारी, भाग 3 किताब अल् ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

★ ★ ★

ख़ुदा तआला के मामूरों और औलिया-उल्लाह की मुख़ालिफ़त और उनको कष्ट देना कभी अच्छा फल नहीं दे सकता जो व्यक्ति यह समझता है कि मैं उनको परेशान करके और दुख देकर भी आराम पा सकता हूँ वे सख़्त ग़लती करता है और नफ़्स उस को धोखा दे रहा है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

यह क़ायदे की बात है कि जब कोई व्यक्ति किसी से मुहब्बत करता हो, ऐसी मुहब्बत जैसे कोई अपनी औलाद से करता है। और एक और व्यक्ति बार-बार कहे कि यह मर जाए या और इसी किस्म के दिल को कष्ट देने वाली बातें करे और उसे तकलीफ़ दे तो वह व्यक्ति उस से क्योंकर ख़ुश हो सकता है और वह बाप जिसके बच्चे के लिए वह व्यक्ति बद-दुआएँ कर रहा है या दुःख देने वाले शब्द उसके बारे में कहा रहा है ऐसे व्यक्ति से कब मुहब्बत कर सकता है? इसी तरह पर औलिया-उल्लाह भी अल्लाह के बच्चों का रंग रखते हैं, क्योंकि उन्होंने जस्मानी युवावस्था का चोला उतार दिया है और अल्लाह तआला की आग़ोश-ए-रहमत में परवरिश पाते हैं। वह उनका संरक्षक, प्रतिपालक और उन के लिए ग़ैरत रखने वाला होता है। जब कोई व्यक्ति (चाहे वह कैसा ही नमाज़, रोज़ा रखने वाला हो) उनकी मुख़ालिफ़त करता है और उनके दुख देने पर तैयार हो जाता है तो अल्लाह तआला की ग़ैरत जोश मारती है और उनकी मुख़ालिफ़त करने वालों पर उस का ग़ज़ब भड़कता है। इस लिए कि उन्होंने उसके एक महबूब को दुख देना चाहा है। उस वक़्त फिर न वे नमाज़ काम आती है न रोज़ा। क्योंकि नमाज़ और रोज़ा के द्वारा उसी ज़ात को ख़ुश करना था जिस को एक दूसरे फ़ेअल से नाराज़ कर लिया है। फिर वे रज़ा का मुक़ाम क्योंकर मिले जब तक ग़ज़ब-ए-इलाही दूर न हो। और वे नादान इन ग़ज़ब के कारणों से अपरिचित होता है, बल्कि अपने नमाज़ रोज़ा पर उसे एक नाज़ और घमंड होता है नतीजा यह होता है कि ख़ुदा तआला का ग़ज़ब दिन-ब-दिन बढ़ता जाता है और वे बजाय उस के क़ुरब हासिल करने के दिन-ब-दिन अल्लाह तआला से दूर हटता जाता है। यहां तक कि बिल्कुल दरबार से बहिष्कृत हो जाता है। इस तरह पर वह व्यक्ति जो बिल्कुल फ़ना की हालत में है और ख़ुदा के समक्ष गिरा हुआ है और ख़ुदा के संरक्षण में परवरिश पा रहा है और ख़ुदा तआला की रहमत ने उसे ढाँप लिया है, यहां तक कि उस का बात करना ख़ुदा का बात करना होता है। उस का दोस्त ख़ुदा का दोस्त और उस का दुश्मन ख़ुदा का दुश्मन हो जाता है। अतः ख़ुदा तआला का दुश्मन रह कर कोई व्यक्ति मोमिन कामिल क्योंकर हो सकता है। इस तरह पर उस का ईमान नष्ट हो जाता है और उसे मग़ज़ूब अलैहिम में से बना देता है। ख़ुदा तआला के मामूरों और औलिया-उल्लाह की मुख़ालिफ़त और उनको कष्ट देना कभी अच्छा फल नहीं दे सकता। जो व्यक्ति यह समझता है कि मैं उनको दुःख दे कर और परेशान कर के भी आराम पा सकता हूँ वह सख़्त ग़लती करता है और नफ़्स उस को धोखा दे रहा है।

(मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 314 मुद्रित 2018क़ादियान)

★ ★ ★

नबी ख़ुदा के फ़ज़्ल से मासूम होता है तो फिर उसके اِغۡفِرۡلِیۡ कहने का क्या अर्थात?
मोमिन के मुख़्तलिफ़ दर्जात के लिहाज़ से اِغۡفِرۡلِیۡ के विभिन्न अर्थ

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरत इब्राहीम आयत नम्बर : 42 رَبَّنَا اغۡفِرۡ لِیۡ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلۡمُؤۡمِنِیۡنَ یَوۡمَ یَقُوۡمُ الۡحِسَابُ तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

नबी ख़ुदा के फ़ज़्ल से मासूम होता है फिर नबी का यह कहना कि اِغۡفِرۡلِیۡ इस का क्या अर्थ? दरअसल ग़ैर आरिफ़ इन्सान की नज़र सीमित होती है। उस की नज़र इन्सान तक ही जाती है और इन्सान तक ही तसल्ली पा जाती है परन्तु आरिफ़ की नज़र ऊपर जाती है और बुलंद होती जाती है। वे समझ लेता है कि बंदे की अल्लाह तआला के मुक़ाबला में क्या हस्ती है। सूरज के सामने एक ज़र्रा की क्या हैसियत है। क्योंकि आख़िर इन्सान उसी की मख़लूक़ है। उस की ज़िंदगी भी अल्लाह तआला की अता की हुई है और हिदायत भी उसी की तरफ़ से आती है। ग़ालिब ने किया ही उम्दा कहा है

जान दी दी हुई उसी की थी
हक़ तो यह है कि हक़ अदा न हुआ

अतः नबी चूँकि आरिफ़ होता है वह अपनी हस्ती को देखता है और जानता है कि जो कुछ मैं कर रहा हूँ वह मैं नहीं बल्कि ख़ुदा ही कर रहा है। इस लिए वह दुआ करता है कि हे अल्लाह मेरे वजूद को ज़्यादा से ज़्यादा मख़फ़ी कर दे और अपने वजूद को ज़्यादा से ज़्यादा ज़ाहिर फ़र्मा। मानो اِغۡفِرۡلِیۡ के इस सूरत में यह माने होते हैं कि हे ख़ुदा तुझे मेरी ही मुहब्बत का वास्ता है कि अपना पर्दा मुझ पर डाल दे। अर्थात मेरा वजूद मिटा कर तेरा वजूद मेरे ज़रीया से ज़ाहिर होने लगे और यह बात ज़ाहिर है कि बंदे के ज़रीया से जिस क़दर अल्लाह तआला का वजूद ज़ाहिर होगा उसी क़दर वे अपने नेक मक़ासिद में कामयाब होगा।

हाँ जब दूसरों के लिए यह शब्द आए तो उस वक़्त उनके हसब मुरातिब इस शब्द के माने होंगे। एक आला दर्जा का मोमिन यहशब्द इस्तिमाल करेगा तो इस के यह अर्थ होंगे कि

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

"नमाज़ का मग़ज़ और रूह वह दुआ है जो एक लज़्ज़त और आनंद अपने अंदर रखती है।"
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

रमज़ानुल-मुबारक में की जाने वाली नेकियां सारा साल जारी रखने का आदेश

दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने के लिए जहां ईमान में मज़बूती ज़रूरी है वहां इलमी और अमली तरक़्क़ी भी ज़रूरी है और इसके लिए कोशिश भी करनी चाहिए

"हमारी जमाअत को सफलता नहीं मिलेगी जब तक आपस में सच्ची हमदर्दी न करें"

यह हमारा लाहे-अमल है : नमाज़ों की तरफ़ मुस्तक़िल तवज्जा, उनको सँवार कर अदा करना, क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ना समझना और इसके अहकामात पर अमल करना,

एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करना और तौहीद के क़ियाम की ख़ातिर हर क़ुर्बानी देने के लिए तैयार रहना

दुनिया के उमूमी हालात तथा असीरान-ए-राहे मौला और पाकिस्तान और अन्य देशों में मुख़ालेफ़त बर्दाश्त करने वाले अहमदियों के लिए दुआ की तहरीक

आदरणीय अब्दुल बाक़ी अरशद साहिब (चेयरमैन अल् शिर्कतुल इस्लामिया यू.के) का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़-ए-जनाज़ा हाज़िर

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 29 अप्रैल 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

रमज़ान आया और समस्त उन लोगों पर जिन्हों ने इस से फ़ैज़ पाने की कोशिश की बरकतें बिखेरते हुए गुज़र गया। अब दो रोज़ बाक़ी रह गए हैं या शायद कुछ स्थानों में रोज़े रहते हों लेकिन बहरहाल रमज़ान अपने आखिर को पहुंच रहा है। एक अक़लमंद और हक़ीक़ी मोमिन हमेशा याद रखता है और रखना चाहिए कि रमज़ान के ख़त्म होने से हम अपनी बहुत सी ज़िम्मेदारियों और फ़रायज़ से आज़ाद नहीं हो गए बल्कि रमज़ान इन फ़रायज़ और ज़िम्मेदारियों की अदायगी का हक़ अदा करने की तर्बीयत कर के गया है।

इन फ़रायज़ की अदायगी और मुस्तक़िल अदायगी के तरीक़ सिखाने आया था और उनमें तरक़्क़ी की मनाज़िल की निशानदेही करने आया था और यह सिखाते हुए अपने अंत को पहुंच रहा है। बेशक फ़र्ज़ रोज़ों का महीना तो ख़त्म हो रहा है लेकिन बाक़ी फ़रायज़ की अदायगी के मयारों को ऊंचा रखने और उनमें तरक़्क़ी करते चले जाने का वक़्त शुरू हो रहा है। अगर हम इस हक़ीक़त को भूल गए कि रमज़ान के बाद हमने अपने फ़रायज़ और हुक़ूक़ की अदायगी के मयारों को किस तरह क़ायम रखना है तो हमने अपना रमज़ान इस तरह नहीं गुज़ारा जिस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था। एक हदीस में आता है, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि पांचों नमाज़ें, एक जुमा दूसरे जुमा तक और एक रमज़ान दूसरे रमज़ान तक अपने मध्य सरज़द होने वाले गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाते हैं इस शर्त के साथ कि कबीरा गुनाहों से इजतिनाब किया जाये।

(सही मुस्लिम, किताब तहारत, बाब الصلوات الخمس...الخ، हदीस 552)

यहां वाज़िह हो कि अगर इन्सान अपनी छोटी छोटी ग़लतियों और गुनाहों की निशानदेही नहीं करता, उनसे बचने की कोशिश नहीं करता और उनके सरज़द होने पर तौबा-ओ-इस्तिग़फ़ार नहीं करता तो वही कबीरा गुनाह बन जाते हैं।

अतः यहां मुराद यह है कि इन्सान हर समय अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिल में रखे, इस्तिग़फ़ार करता रहे ताकि इन चीज़ों से बचता रहे। अतः अगर हम एक रमज़ान को दूसरे रमज़ान के साथ नेकियां करते हुए और अपने फ़रायज़ की अदायगी करते हुए, अपने हक़ अदा करते हुए जो इबादतों के भी हक़ हैं और लोगों के भी हक़ हैं वर्ष के बाक़ी महीने नहीं गुज़ारते तो हमने रमज़ान से भरपूर फ़ायदा नहीं उठाया। हमारी ख़ुशक़िसमती है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हर मामले में बड़ी खोल कर हमारी राहनुमाई फ़रमाई है। बार-बार नियमित हमें नसीहत फ़रमाई कि अपनी इबादतों के भी हक़ अदा करो और बंदों के भी हक़ अदा करो। अपनी ज़िंदगीयां गुज़ारने के लिए एक लाहे-अमल हमें दे दिया। अगर हम इस लाहे-अमल को अपनी ज़िंदगीयों का हिस्सा बना लें, इस तरीक़ के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगीयां गुज़ारने की कोशिश करें तो निसंदेह हम इन रास्तों पर चलने वाले बन जाऐंगे जो नेकियों में बढ़ने और तरक़्क़ी करने के रास्ते हैं, जो एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान को मिलाने के रास्ते हैं, जो इस दौरान की जाने वाली ग़लतियों और गुनाहों से बचाने के रास्ते हैं, माफ़ करवाने के रास्ते हैं। इस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ये गुलाम-ए-सादिक़ ही हैं जो हमें इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगीयां गुज़ारने की बार-बार तलक़ीन फ़रमाते हैं और खोल कर वर्णन फ़रमाते हैं कि अगर अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के मुस्तक़िल वारिस बनना है तो उन पर अमल करो। अतः आप की नसाएह में से चंद नसाएह मैं इस वक़्त वर्णन करूँगा।

रमज़ान में हमारी इबादत की तरफ़ तवज्जा पैदा होती है। फ़र्ज़ नमाज़ें और नवाफ़िल हम ख़ास एहतिमाम से अदा करने की कोशिश करते हैं लेकिन नमाज़ों की फ़र्ज़ीयत कोई ख़ास महीना और किसी ख़ास वक़्त के लिए विशेष नहीं है बल्कि दिन में पाँच नमाज़ें अपने मुक़र्ररा वक़्त पर साल के बारह महीनों में अदा करनी ज़रूरी हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बारे में मोमिनों को बार-बार तवज्जा दिलाई है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि नमाज़ को छोड़ना इन्सान को कुफ़्र और शिर्क के क़रीब कर देता है।

(सही मुस्लिम, किताबु ईमान, बाब بيان اطلاق اسم الكفر على من ترك

शेष पृष्ठ 6 पर

जंग-ए-जमल के होने की वजह और इस की हक़ीक़त
क़ुरआन और हदीस ने किसी गुस्ताख रसूल को इस दुनिया में सज़ा देने का किसी इन्सान को इख़्तियार नहीं दिया
छोटे बच्चों को अज़ान देने की आज्ञा नहीं देनी चाहिए
महिलाओं के बाल कटवाने और उन बालों को कैंसर के किसी ग़ैर मुस्लिम मरीज़ को donate करने के बारे में

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(क़िस्त13)

एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल से जंग-ए-जमल के होने की वजह और इस की हक़ीक़त दरयाफ़त की। तथा लिखा है कि कुछ लोग कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हां पर बेरहमी से हाथ उठाया था, जिसकी वजह से हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा का गर्भ ज़ाए हो गया। इन बातों में किस हद तक सच्चाई है? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 21नवंबर 2019 ई. में इस का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो पर लगाया जाने वाला इल्ज़ाम बिल्कुल ग़लत, नाहक़ और घटनाए और हक़ायक़ के विपरीत है। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद चंद माह तक जीवित रहीं और यह समय भी अधिकतर उनका बीमारी की हालत में ही गुज़रा। फिर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हक़ीक़ी औलाद थीं। उनके साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ऐसा बुरा व्यवहार कैसे हो सकता है? जबकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सम्बन्ध रखने वाले ग़ैर लोगों से भी बे-इंतिहा मुहब्बत करते थे। इसलिए एक अवसर पर जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने आपसे सवाल किया कि आपने मुझे उसामा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो से कम वज़ीफ़ा क्यों दिया है? तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाया: उसामा रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तुमसे अधिक प्यारा था और उसका बाप (अर्थात हज़रत ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो बिन हारिसा) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तुम्हारे बाप (अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो) से अधिक प्यारा था, इसलिए मैंने उसे तुम से अधिक वज़ीफ़ा दिया है।

अतः वह व्यक्ति जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के एक ग़ुलाम के बेटे को अपने हक़ीक़ी बेटे पर इस क़दर प्राथमिकता देता हो, उस पर यह आरोप लगाना कि उसने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हक़ीक़ी औलाद के साथ यह व्यवहार किया था, किसी तरह भी उचित नहीं। और यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के दुश्मनों की तरफ़ से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो पर सरासर झूठा इल्ज़ाम है। जहां तक जंग-ए-जमल की हक़ीक़त है तो इस में कोई संदेह नहीं कि यह जंग दो मुसलमान गिरोहों हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के लश्करों के मध्य हुई और ऐसी खूँरेज़ जंग हुई कि मुसलमानों में कोई लड़ाई ऐसी भयावह नहीं हुई और बहुत से मुसलमान और बड़े बड़े जरनैल और बहादुर इस जंग में मारे गए। लेकिन इस सारी कार्रवाई के पीछे उन्हें मुफसिदों और शरीर लोगों का हाथ था जिन्हों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को क़तल करने के बाद मदीना पर क़बज़ा कर लिया था। और यह जंग भी उन्हें मुफसिदों ने दो मुसलमान गिरोहों में ग़लत-फ़हमियाँ पैदा कर के और कई शरारतों को ख़ुद शुरू कर के भड़काई थी। इस विषय पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने "घटनाए ख़िलाफ़त उलवी" में निहायत सैर-ए-हासिल बेहस फ़रमाई है। उसे भी पढ़ें।

मसाजिद में नमाज़ों के लिए बच्चों के अज़ान देने के बारे में एक दोस्त ने श्रीमान मुफ़्ती सिलसिला साहिब से हासिल करदा फ़तवे से मतभेद करते हुए अपनी राय का इज़हार कर के हज़रत अमीरुल मोमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत-ए- अक़्दस में लिखा कि छोटे बच्चों को अज़ान देने की आज्ञा नहीं देनी चाहिए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 25 दिसंबर 2019 ई. में इस का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया :

उत्तर : इस विषय पर श्रीमान मुफ़्ती साहिब का उत्तर बिल्कुल दरुस्त है और मुझे इस से सहमती है। यदि अज़ान देने वाले के लिए भी कोई शर्ते होतीं तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अवश्य उनकी तरफ़ भी हमें तवज्जा दिलाते जैसा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ की इमामत करवाने वाले के लिए कई शरायत वर्णन फ़रमाई हैं लेकिन अज़ान के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने केवल इस क़दर फ़रमाया कि जब नमाज़ का वक़्त हो तो तुम में से एक व्यक्ति अज़ान दे। और अज़ान देने वाले के लिए आपने कोई शर्ते वर्णन नहीं फ़रमाई। अतः अज़ान देना एक सवाब का काम है लेकिन यह ऐसी ज़िम्मेदारी नहीं कि इस के लिए ग़ैरमामूली शरायत वर्णन की जातीं बल्कि हर वह व्यक्ति जिसकी आवाज़ अच्छी हो और उसे अज़ान देनी आती हो वह इस डयूटी को सरअंजाम दे सकता है।

बच्चों को अज़ान देने का अवसर देने से उनकी हौसला-अफ़ज़ाई होती है और उनमें दीन के काम करने का शौक़ पैदा होता है। जो एक बहुत अच्छी बात है। मैं ख़ुद भी यहां मस्जिद मुबारक में अलग बच्चों से अज़ान दिलवाता हूँ।

नोट तैयार किए : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने मकतूब में श्रीमान मुफ़्ती सिलसिला साहिब के जिस फ़तवे की तौसीक़ फ़रमाई है, वह फ़तवा भी पाठकों के लाभ प्राप्त के लिए नीचे दर्ज किया जा रहा है : इस्तफ्ता-ए- अज़ान देने के लिए कम से कम उमर क्या है? क्या बचा अज़ान दे सकता है? फ़तवा अज़ मुफ़्ती साहिब : मुअज़्ज़न के लिए उमर की कोई क़ैद हमें शरीयत में नहीं मिल सकी। इस लिए यदि कोई बच्चा दरुस्त तरीक़ पर अज़ान देने की योग्यता रखता है तो वह अज़ान दे सकता है।

एक महिला ने महिलाओं के बाल कटवाने और उन बालों को कैंसर के किसी ग़ैर मुस्लिम मरीज़ को donate करने के बारे में हज़रत अमीरुल मोमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत अक़्दस में इस्तिफ़सार किया। हुज़ूर अनवर ने अपने पत्र तिथि 25 दिसंबर 2019 ई. में इस सवाल का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया :

उत्तर : ज़रूरत पड़ने पर महिलाओं के बाल कटवाने में कोई हर्ज नहीं। इसलिए हज और उमरा की तकमील पर महिलाएं अपने बाल काट कर ही एहराम खौलती हैं। अहादीस में आता है कि सहाबियात ज़रूरत पड़ने पर अपने बाल कटवाया करती थीं। जबकि महिलाओं को हलक़ अर्थात सिर मुंडवाने की आज्ञा नहीं। इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मर्दों को महिलाओं की और महिलाओं को मर्दों के तरह समानता इख़्तियार करने से मना फ़रमाया है। अतः महिलाओं को मर्दों के ढंग पर बाल नहीं कटवाने चाहिएं। लेकिन यदि ज़ीनत की ख़ातिर मुनासिब हद तक बाल कटवाए जाएं जिसमें मर्दों से मुशाबहत पैदा न होती हो तो इस में कोई हर्ज नहीं।

किसी मरीज़ को बाल donate करना सवाब का काम है। इस में कोई हर्ज की बात नहीं क्योंकि जब ईलाज के सिलसिले में एक इन्सान दूसरे इन्सान को अपना ख़ून और अन्य अंग बतौर अतीया दे सकता है तो बाल क्यों नहीं दे सकता।

ज़ाईक दोस्त ने हज़रत अमीरुल मोमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत अक़्दस में गुस्ताख रसूल की सज़ा, क़ुरआन और हदीस को हिफ़्ज़ करने, दुरूद शरीफ़ और अन्य वर्णन और अज़कार, अलग दुआओं और क़ुरआन-ए-करीम की सूरतों को गिन कर पढ़ने के विषय में कुछ इस्तिफ़सारात भिजवा कर उनके बारे रहनुमाई चाही। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र मौरख़्ा 25 दिसंबर 2019 ई. में इन सवालों के निम्नलिखित उत्तर इरशाद फ़रमाए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

क़ुरआन-और-हदीस ने किसी गुस्ताख रसूल को इस दुनिया में सज़ा देने का किसी इन्सान को इख़्तियार नहीं दिया। ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी किसी गुस्ताख-ए-रसूल को सज़ा नहीं दी और यदि किसी बदबख़त की ऐसी गुस्ताख़ी पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जैसे मुहिब रसूल ने उस व्यक्ति को सज़ा देने की हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से आज्ञा मांगी तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें भी इसकी आज्ञा नहीं दी। अपने आक़ा-ओ-मुता के नक़श-ए-क़दम पर चलते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी यही तालीम वर्णन फ़रमाई है।

इसके साथ इस्लाम ने दुनिया के अलग देशों के अर्बाब समाधान और अनुबंध और अन्य विषयों के लिए यह रहनुमाई भी वर्णन फ़रमाई है कि किसी के धर्म और उनकी सम्मानित व्यक्तियों का इस तरह वर्णन न किया जाए जो उस धर्म के मानने वालों के लिए तकलीफ़ का बायस हो। अतः एक तरफ़ इस्लाम ने इस दुनिया में किसी इन्सान को किसी गुस्ताख-ए-रसूल को सज़ा देने की आज्ञा नहीं दी तो दूसरी तरफ़ यह तालीम भी दी है कि कोई व्यक्ति किसी दूसरे धर्म और उनके पेशवाओं का अनुचित शब्दों में वर्णन न करे।

शेष आगे

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आयरलैण्ड की यात्रा, सितम्बर 2014 ई. (भाग-8)

डबलिन शहर की ओर यात्रा

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

इस्लाम के सम्बन्ध में मुझे इतना ज़्यादा ज्ञान नहीं था परन्तु ख़लीफतुल मसीह का भाषण सुन कर अब मुझ पर इस्लाम का अत्यधिक अच्छा तास्सुर क़ायम हो गया है।

एक मेहमान महिला Mrs Josephine Vahy ने कहा : आज की शाम अत्यधिक दिलकश और पुरसुकून थी। ख़लीफतुल मसीह का भाषण सुनने के लायक़ था। यदि सारी रात भी ख़लीफतुल मसीह भाषण फ़रमाते रहते तो मैं सुनती जाती। मेरी दुआ है कि ख़लीफ़ा अमन और सुकून के साथ जीवन गुज़ारें।

उन्हों ने कहा : ख़लीफतुल मसीह की तक़रीर के समस्त बिन्दु सुन्दर थे। आपकी तक़रीर करने का ढंग भी बहुत दिलकश था।

एक लोकल जर्नलिस्ट Mrs Bertha कहती हैं : आज से पहले मैं इस्लाम से बिल्कुल परिचित नहीं थी। मैंने आज का सारा दिन मस्जिद "मर्यम" में गुज़ारा है और ख़लीफ़ा का ख़ुतबा जुमा और मस्जिद मर्यम के हवाला से उद्घाटनिय भाषण सुना है मैंने यही परिणाम निकाला है कि इस्लाम अमन का धर्म है।

मैं ने अपनी आँखों से देख लिया है कि अहमदी लोग किस क़दर ख़ुश-मिज़ाज हैं।

इसी तरह आइरिश महिला Mrs. Noreen Tarr साहबा कहती हैं : मुझे इस्लाम के सम्बन्ध में ज़्यादा ज्ञान नहीं था। मुझे केवल इस हद तक ही ज्ञान था जो ख़बरों में नज़र आता है अर्थात ख़ुदकुश धमाके और दहश्तगर्दी। परन्तु ख़लीफ़ा ने जिस इस्लाम का बताया है वह तो बिल्कुल विभिन्न है। वह इस्लाम तो मुहब्बत और अमन का मनमोहक संदेश देता है।

मस्जिद मर्यम के उद्घाटन के हवाला से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आयरलैंड में आमद की ख़बर अख़बारात और रेडियो पर आई तो एक शाम नैशनल सदर साहब को एक कैथोलिक महिला की ईमेल आई जिसमें महिला ने लिखा कि : मुझे ज्ञान हुआ है कि अहमदिया जमाअत के ख़लीफ़ा आयरलैंड आए हुए हैं आज मेरे पति का हस्पताल में ऑप्रेशन हो रहा है। आप ख़लीफतुल मसीह से मेरे पति की सेहत के लिए दुआ की करें।

26 सितम्बर को मस्जिद मर्यम के उद्घाटन के हवाला से इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में कवरेज हुई।

आयरलैंड के नैशनल टी.वी चैनल TG 4 ने मस्जिद के उद्घाटन के हवाला से ख़बर प्रसारित की। ख़बर में मस्जिद की तस्वीर दिखाई और हुज़ूर अनवर को ख़ुतबा जुमा देते हुए दिखाया। यह टी.वी पूरे मुल्क में अत्याधिकता के साथ देखा जाता है। एक अंदाज़े के अनुसार इस चैनल को देखने वालों की संख्या पाँच मिलियन है।

इसके अतिरिक्त एक रेडियो चैनल Rte-1 पर मस्जिद के उद्घाटन के हवाला से ख़बर प्रसारित हुई।

Rte रेडियो आयरलैंड का सबसे मक़बूल रेडियो चैनल है इसके सुनने वालों की संख्या एक मिलियन से अधिक बताई जाती है।

इस रेडियो ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का जुमा के बाद इंटरव्यू रिकार्ड किया था जिसका वर्णन पहले हो चुका है। इस रेडियो चैनल ने इसी रोज़ शाम को यह इंटरव्यू रेडियो पर प्रसारित किया। इंटरव्यू से पूर्व प्रोग्राम की मेज़बानी ने मस्जिद के बनने और उद्घाटन के हवाला से परिचय प्रस्तुत किया और हुज़ूर अनवर की नमाज़-ए-जुमा के उस तिलावत के कुछ हिस्से प्रसारित किए और फिर उसके बाद हुज़ूर अनवर का इंटरव्यू उसी प्रकार प्रसारित किया।

गालवे के एक स्थानीय रेडियो चैनल Galway Bay F.M पर भी विभिन्न औक़ात में तीन मर्तबा मस्जिद के उद्घाटन के हवाला से ख़बर प्रसारित की गई। उन्होंने निमंलिखित ख़बर प्रसारित की।

"आज मध्याह्न गालवे आयरलैंड की पहली मस्जिद का उद्घाटन हुआ। मस्जिद मर्यम गालवे और आयरलैंड के रहने वालों के लिए अमन और मुहब्बत का गहवारा है। इस मस्जिद की बनावट इस्लामी और आइरिश डिज़ाइन के अनुसार है। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहब ने मस्जिद का उद्घाटन किया और दुआ करवाई। आज का दिन गालवे के लिए एक तारीख़ी एहमीयत रखता है। इस रेडियो को सुनने वालों की संख्या एक लाख 35 हज़ार के क़रीब है।

टी.वी और रेडियो के अतिरिक्त प्रिंट मीडिया में भी मस्जिद मर्यम की उद्घाटन समारोह को अच्छी कवरेज मिली।

The Irish Times ने मस्जिद के उद्घाटन से पहले तिथि 20 सितम्बर को भी ख़बर प्रकाशित की जिसमें उन्होंने मस्जिद मर्यम का परिचय दिया। मस्जिद के डिज़ाइन की सुन्दरता का भी वर्णन किया तथा मस्जिद मर्यम पर मुनक़्क़श अरबी इबारात कलमा तय्यबा और अहादीस का अनुवाद भी लिखा।

इसके साथ साथ उन्होंने जमाअत का परिचय भी प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने बताया कि जमाअत अहमदिया की बुनियाद मिर्ज़ा गुलाम अहमद अलैहिस्सलाम ने 1889 ई. में रखी थी और अब 200 देशों तक यह जमाअत फैल चुकी है। अफ़्रीक़ा में भी इस जमाअत के मानने वालों की एक बहुत बड़ी संख्या है। इसी तरह पाकिस्तान और इंडोनेशिया में भी एक बड़ी संख्या उपस्थित है। इसके अतिरिक्त बर्तानिया में भी 30 हज़ार और उत्तरी अमरीका में 15 हज़ार के लग भग अहमदी रहते हैं।

इस अख़बार ने लिखा कि : यह जमाअत सांप्रदायिकता के विरुद्ध है और दूसरे धर्मों के लिए बर्दाश्त रखने का तालीम देती है। जमाअत अहमदिया तलवार के जिहाद की बजाय कलम से जिहाद पर-ज़ोर देती है।

इसी तरह गालवे के एक अख़बार Galway Advertizer में भी मस्जिद के उद्घाटन के हवाला से ख़बर प्रकाशित हुई।

इस अख़बार के पाठकों की संख्या लगभग 2 लाख बीस हज़ार के क़रीब है।

गालवे का एक और प्रसिद्ध हफ़्ता-वार अख़बार Galway Independent है जिसके पाठकों की संख्या एक लाख 84 हज़ार से अधिक बताई जाती है। इस अख़बार में भी मस्जिद मर्यम के बारे में ख़बर प्रकाशित हुई।

अख़बार Connacht Tribune भी हफ़्ता-वार है और इसके पाठकों की संख्या डेढ़ लाख से अधिक बताई जाती है। इस अख़बार में भी मस्जिद मर्यम के हवाला से ख़बर प्रकाशित हुई।

27 सितम्बर 2014 शनिवार के दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह छः बजकर दस मिनट पर "मस्जिद मर्यम" पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

इतफ़ाल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ क्लास।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक रिपोर्टस और पत्र मुलाहिज़ा फ़रमाए और हिदायात से नवाज़ा।

प्रोग्राम के अनुसार ग्यारह बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ "मस्जिद मर्यम" पधारे और इतफ़ाल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ क्लास शुरू हुई।

प्रोग्राम का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो प्रिय अर्सलान मलिक ने की और इस का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद प्रिय सग़ीर अहमद ने किया।

इसके बाद प्रिय शऊर अहमद ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की निमंलिखित हदीस प्रस्तुत की और प्रिय बिलाल अहमद ने इस का अनुवाद प्रस्तुत किया।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन करते हैं हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में बैठे थे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर सूरत जुमा नाज़िल हुई। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस की आयत وَاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ पढ़ी जिसके अर्थ ये हैं कि "कुछ बाद में आने वाले लोग भी इन सहाबा में शामिल होंगे जो अभी उनके साथ नहीं मिले" तो एक आदमी ने पूछा हे रसूलुल्लाह ये कौन लोग हैं जो दर्जा तो सहाबा का रखते हैं परन्तु अभी उनमें

शामिल नहीं हुए। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। उस व्यक्ति ने तीन मर्तबा यही प्रश्न दुहराया।

रावी कहते हैं कि हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हो हम में बैठे थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना हाथ उनके कंधे पर रखा और फ़रमाया ईमान सुरय्या के पास भी पहुंच गया अर्थात ज़मीन से उठ गया तो उन लोगों में से कुछ लोग इस को वापस ले आएँगे (अर्थात आख़रीन से मुराद फ़ारस के लोग हैं जिनमें से मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम होंगे और उन पर ईमान लाने वाले सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु का दर्जा पाएँगे)(सही बुख़ारी पुस्तक अलतफ़सीर सूरत जुमा)

इसके बाद प्रिय फ़र्साद अहमद ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मंजूम कलाम

"ख़ुदा के पाक लोगों को ख़ुदा से नुसरत आती हैं
जब आती है तो फिर आलम को इक दिखाती है"

मधुर आवाज़ में प्रस्तुत की

इसके बाद प्रिय अरमूग़ान मुज़फ़्फ़र ने उर्दू भाषा में "सदाक़त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम" के शीर्षक पर तक़रीर की

इसके बाद प्रिय सबाहुद्दीन अलीम ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्हाम "मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा" के शीर्षक पर अंग्रेज़ी भाषा में तक़रीर की।

इसके बाद आठ अतफ़ाल पर आधारित ग्रुप ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का क़सीदा

يَا عَيْنَ فَيْضِ اللّٰهِ وَالْعِرْفَانِ
يَسْعٰى اِلَيْكَ الْخَلْقُ كَالظَّمْاٰنِ

से कुछ चुने हुए अशआर मधुर आवाज़ में पढ़ कर सुनाए। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने बच्चों को प्रश्न करने की आज्ञा अता फ़रमाई

एक तिफ़्ल ने प्रश्न किया कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कौन सी पुस्तकें अतफ़ाल को पढ़नी चाहिऐं।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया "हकीतुल वह्वी" पढ़ो। आसान पुस्तकें पढ़नी हैं तो मलफ़ूज़ात की अंतिम भाग पढ़ो। और यदि अंग्रेज़ी भाषा की पुस्तक पढ़नी है तो फिर "Essence of Islam" पढ़ें। इस पुस्तक में विभिन्न शीर्षकों पर हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें से इक़तिबासात और मज़ामीन इकट्ठे किए गए हैं।

एक तिफ़्ल के इस प्रश्न पर कि हम कौन सी दुआ पढ़ीं कि इस्लाम अहमदियत दुनिया में जल्द फैल जाए?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : उसके लिए अपनी भाषा में दुआ करो। दुरूद शरीफ़ पढ़ो। इस में सारी चीज़ें आ जाती हैं। दुरूद शरीफ़ समझ कर और ग़ौर करके पढ़ो। इस से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए सारी बरकतें मांगी गई हैं। दुरूद शरीफ़ में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए भी बरकतों का वर्णन है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का जो दायरा अनुकरण का था उसके अनुसार ख़ुदा तआला ने आपको बहुत कुछ दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का दायरा अनुकरण तो समस्त संसार है। समस्त दुनिया हैं तो तुम दुआ करो कि आजकल जो मुख़ालेफ़ीन, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का विरोध करते हैं और इस्तिहज़ा करते हैं उनको ख़ुदा तआला पकड़े और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इज़्ज़त और सौभाग्य और आला स्थान सारे संसार में क़ायम हो और मुस्लमान सही और हक़ीक़ी मुस्लमान बन जाएं।

एक तिफ़्ल ने प्रश्न किया कि कैथोलिक ईसाई कहते हैं कि अगर 13 तारीख़ को जुमा आ जाए तो वह बुरा दिन होता है।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हमारा तो प्रत्येक जुमा चाहे वह किसी तारीख़ को भी हो बरकतों वाला दिन होताहै। इस लिए सूरत जुमा भी नाज़िल हुई। एक यहूदी ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि हे अमीरुल मोमिनीन आप अपनी पुस्तक में एक आयत पढ़ते हैं यदि यह आयत हम पर नाज़िल हुई होती तो हम उस दिन को जिस में यह आयत नाज़िल हुई ईद के दिन के तौर पर मनाते। तो इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा वह कौन सी आयत है तो इस पर उस यहूदी ने कहा :

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا۔

तो इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि यह आयत अर्फ़ात में जुमा के दिन नाज़िल हुई और जुमा का दिन तो हमारे लिए ईद का दिन ही होता है।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जुमा ईद से भी ज़्यादा महत्वपूर्ण है और बरकतों वाला दिन है। इस लिए ख़ुशी मनानी चाहिए। अतः हमारे लिए तो जुमा का दिन अच्छा है और ख़ुशी का दिन है और बरकतों वाला दिन है।

एक तिफ़्ल ने प्रश्न किया कि केवल चार इल्हामी पुस्तकें अर्थात क़ुरआन-ए-करीम, इंजील, तौरात और ज़बूर क्यों हैं?

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया केवल चार तो नहीं हैं क़ुरआन-ए-करीम में इब्राहीम अलैहिस्सलाम और मूसा अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का भी वर्णन आता है। प्रत्येक नबी पर कुछ न कुछ तो उतरा है। हिंदू वेद पढ़ते हैं। प्रत्येक नबी के मानने वालों के लिए कुछ न कुछ शिक्षा तो ज़रूर होगी। परन्तु असल सुरक्षित पुस्तक क़ुरआन-ए-करीम है जो चौदह सौ वर्षों से सुरक्षित है। बाक़ी धर्मों वाले कहते हैं कि हमारी पुस्तकें ख़ुदा की ओर से हैं। जबकि ऐसा नहीं है उनकी पुस्तकें जो वह प्रस्तुत करते हैं ख़ुदा की ओर से नहीं हैं बल्कि उनमें बहुत कुछ मिला-जुला है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि हमने प्रत्येक क़ौम में नबी भेजे हैं क़ुरआन-ए-करीम ने कुछ अम्बिया अलैहिस्सलाम के नामों का वर्णन किया है। बाक़ी अम्बिया अलैहिस्सलाम के नामों का वर्णन नहीं किया। इस लिए इन अम्बिया अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का भी पता नहीं। इसी तरह अम्बिया अलैहिस्सलाम के आने के साथ विभिन्न क्षेत्रों में आबाद विभिन्न क़ौमों में शरीयतें उत्तरी होंगी। शिक्षाएं उत्तरी होंगी तभी तो उन क़ौमों को समझ आई होगी और उन के लिए हिदायत के सामान हुए होंगे।

एक तिफ़्ल ने प्रश्न किया कि क्या तीसरी विश्वव्यापी जंग हो सकती है। इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि यदि संसार ने अपने ख़ुदा को न पहचाना और ज़ुल्म और अत्याचार की राह इख़तियार की तो फिर ख़ुदा की ओर से अज़ाब आएँगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया छोटी छोटी जंगें तो प्रत्येक जगह हो रही हैं। अफ़ग़ानिस्तान में लड़ाई हो रही है। यूक्रेन में लड़ाई हो रही है। सीरिया में लड़ाई हो रही है और भी बहुत सी जगहों पर हालात ख़राब हैं और हालात की ख़राबी में निरन्तर बढ़ोतरी हो रहा है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मैं तो चार वर्षों से कह रहा हूँ कि तीसरी विश्वव्यापी जंग की ओर बढ़ रहे हैं। पोप ने तो कहा था कि यह जंग शुरू हो चुकी है।

जन्नत में जाने के हवाले से एक प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यह फ़ैसला ख़ुदा तआला ने करना है कि किस ने जन्नत में जाना है। अच्छे और नेक अनुकरण और अच्छी चीज़ें जन्नत में ले जाती हैं। और बुरे आमाल और बुरी बातें जन्नत में जाने से रोकती हैं परन्तु यह फ़ैसला ख़ुदा का है कि किस ने जन्नत में जाना है परन्तु अंततः एक समय ऐसा आएगा कि प्रत्येक ने जन्नत में

शेष पृष्ठ 11 पर

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ02 का शेष

الصلوٰة। हदीस : 247)

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि क़यामत के दिन सबसे पहले जिस चीज़ का बंदों से हिसाब लिया जाएगा वह नमाज़ है। अगर यह हिसाब ठीक रहा तो वह कामयाब हो गया और निजात पा गया।

(सुंन अल् तिर्मज़ी, अबवाब अस्सलात, باب ما جاء ان اول ما يحاسب به العبد الخ ...।, हदीस 413)

अतः यह एहमियत है नमाज़ की। किसी ख़ास महीने के लिए विशेष नहीं बल्कि दिन में पाँच नमाज़ों की तरफ़ तवज्जा दिलाई गई है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें बार-बार नमाज़ों की एहमियत का आदेश दिया है और नसीहत फ़रमाई है और खोल कर वर्णन फ़रमाया कि नमाज़ क्या है? किस तरह अदा करनी चाहिए? किस तरह हम नमाज़ से लज़्ज़त उठा सकते हैं? और यह लज़्ज़त उठाने की कोशिश भी करनी चाहिए। ऐसी नमाज़ें हों जो अल्लाह तआला से मुहब्बत में बढ़ाने वाली हों। यह नहीं कि जब ज़रूरत हुई, कोई दुनियावी मसला पेश हुआ तो जानिमाज़ बिछाई या मस्जिद में चले गए और थोड़ी सी गिर्ये-ओ-ज़ारी करली, रो लिए, दुआएं कर लीं। जब मसला हल हो गया तो फिर भूल गए या केवल रमज़ान में ही नमाज़ों की तरफ़ तवज्जा कर ली फिर भूल गए या वह तवज्जा नहीं रही जो होनी चाहिए थी। अगर यह हो तो फिर न नमाज़ें गुनाहों से माफ़ करवाने वाली होती हैं न जुमा और न रोज़े। जैसा कि हदीस में वर्णन हुआ है जो मैं ने पेश की। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात की वज़ाहत फ़रमाते हुए कि "नमाज़ क्या है?"

फ़रमाया : "यह एक ख़ास दुआ है। परन्तु लोग इस को बादशाहों का टैक्स समझते हैं।" मजबूरी से पढ़नी है । "नादान इतना नहीं जानते कि भला ख़ुदा तआला को इन बातों की क्या हाजत है। उस के ग़िना -ए-ज़ाती को इस बात की क्या हाजत है कि इन्सान दुआ, तस्बीह और ख़ुदा स्तुति में व्यस्त है बल्कि इस में इन्सान का अपना ही फ़ायदा है कि वे इस तरीक़ पर अपने मतलब को पहुंच जाता है।" फ़रमाया कि "मुझे यह देख कर बहुत अफ़सोस होता है कि आजकल इबादात और तक़्वा और दीनदारी से मुहब्बत नहीं है।" यह तो मुहब्बत की बातें हैं। मुहब्बत हो तो सही तरह उन फ़रायज़ की अदायगी होती है।'' इस की वजह एक आम ज़हरीला असर रस्म का है। इसी वजह से अल्लाह तआला की मुहब्बत सर्द हो रही है।" रस्मों में इन्सान ज़्यादा पड़ गया है।'' और इबादत में जिस किस्म का मज़ा आना चाहिए वह मज़ा नहीं आता। दुनिया में कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसमें लज़्ज़त और एक ख़ास आनंद अल्लाह तआला ने न रखा हो। जिस तरह पर एक मरीज़ एक उम्दा से उम्दा ख़ुश-ज़ाएक़ा चीज़ का मज़ा नहीं उठा सकता और वह उसे तल्ख़ या बिल्कुल फ़ीका समझता है।" दवाईयां खा के या रोग की वजह से मुँह फ़ीका हो जाता है, मज़ा ही नहीं आता किसी चीज़ का। मरीज़ खाने से इन्कार कर देते हैं या खाने में बुराईयां निकालने लग जाते हैं। फ़रमाया कि "इसी तरह वे लोग जो इबादत इलाही में आनंद और लज़्ज़त नहीं पाते। "वे भी बीमारों की तरह हैं'' उनको अपनी बीमारी की फ़िक्र करनी चाहिए क्योंकि जैसा मैंने अभी कहा है दुनिया में कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसमें ख़ुदा तआला ने कोई न कोई लज़्ज़त नहीं रखी हो अल्लाह तआला ने बनीनौ इन्सान को इबादत के लिए पैदा किया तो फिर क्या वजह है कि इस इबादत में इस के लिए लज़्ज़त और आनंद न हो।'' फ़रमाया कि ''लज़्ज़त और आनंद तो है।" यह नहीं कि नहीं है'' मगर इस से आनंद उठाने वाला भी तो हो अल्लाह तआला फ़रमाता है। وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (अल् ज़ारियात : 57) अब इन्सान जबकि इबादत ही के लिए पैदा हुआ है ज़रूरी है कि इबादत में लज़्ज़त और आनंद भी अत्यधिक रखा हो।" अवश्य इस दर्जे का रखा होना चाहिए जिस के लिए पैदा किया गया है।'' इस बात को हम अपने प्रतिदिन के मुशाहिदा और तजुर्बे से ख़ूब समझ सकते हैं।" फ़रमाया कि "उदारहणतः देखो अनाज और समस्त खाने और पीने के योग्य इश्याय इन्सान के लिए पैदा हुई हैं।" सब खाने वाली चीज़ें इन्सान के लिए पैदा हुई हैं।'' तो क्या उनसे वह एक लज़्ज़त और आनंद नहीं पाता है? क्या इस ज़ायक़ा, मज़े और एहसास के लिए उस के मुँह में ज़बान मौजूद नहीं? क्या वे ख़ूबसूरत अश्या देखकर वनस्पति हो या निर्जीव वस्तुएँ, पशु हों या इन्सान आनंद नहीं पाता? क्या दिल ख़ुशकुन और सुरीली आवाज़ों से उस के कान आनंदित नहीं होते? फिर क्या कोई दलील और भी इस बात को प्रमाणित करने के लिए मतलूब है कि इबादत में लज़्ज़त नहीं।" हर चीज़ में लज़्ज़त है और इन्सान इस से आनंद उठाता है तो फिर इबादत में क्यों नहीं। फ़रमाया कि "ख़ूब समझ लो कि इबादत भी कोई बोझ और टैक्स नहीं है इस में भी एक लज़्ज़त और आनंद है और यह लज़्ज़त और आनंद दुनिया की समस्त लज़्ज़तों और समस्त हज़ूज़ नफ़्स से उत्तम और बुलंद है।" फ़रमाया "जैसे एक मरीज़ किसी उम्दा से उम्दा ख़ुश-ज़ाएक़ा ग़िज़ा की लज़्ज़त से वंचित है इसी तरह पर हाँ ठीक ऐसा ही वे कमबख़्त इन्सान है जो इबादत-ए-इलाही से लज़्ज़त नहीं पा सकता।" (मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 160 ऐडीशन 1984 ई.) इस की हालत भी मरीज़ों वाली है। अपने मर्ज़ का ईलाज करो, फ़िक्र करो। अतः इस नुक्ता को समझने की ज़रूरत है कि लज़्ज़त किस तरह हासिल करने की कोशिश की जाए।

जिस चीज़ का इन्सान को इदराक ही नहीं, पता ही नहीं उस की लज़्ज़त किस तरह हासिल कर सकता है? जिसकी समस्त हसीं ही मर गई हो वे किस तरह किसी नेअमत और उस की लज़्ज़त से फ़ायदा उठा सकता है और आनंद महसूस कर सकता है? दुनिया-दारी में अगर इन्सान पड़ जाए, फ़िक्र ही न हो इन चीज़ों की तो वे तो मरीज़ बन गया।

इस के हल का भी आपने तरीक़ा वर्णन किया है। फ़रमाते हैं कि "मैं देखता हूँ कि लोग नमाज़ों में ग़ाफ़िल और सुस्त इस लिए होते हैं कि उनको इस लज़्ज़त और आनंद से सूचना नहीं जो अल्लाह तआला ने नमाज़ के अंदर रखा है और बड़ी भारी वजह इस की यही है "कि उस को पता नहीं है।'' फिर शहरों और गांव में तो और भी सस्ती और ग़फ़लत होती है। अतः पचासवां हिस्सा भी तो पूरी मुस्तइद्दी और सच्ची मुहब्बत से अपने मौला हक़ीक़ी के हुज़ूर सिर नहीं झुकाता। फिर प्रश्न यही पैदा होता है कि क्यों?" क्यों सिर नहीं झुकाता। क्यों इबादत नहीं करता?'' उनको इस लज़्ज़त की इत्तिला नहीं और न कभी उन्होंने इस आनंदको चखा है। और धर्मों में ऐसे अहकाम नहीं हैं। कभी ऐसा होता है कि हम अपने कामों में मुबतला होते हैं और मुअज़्ज़न अज़ान दे देता है। फिर वे सुनना भी नहीं चाहते।" अज़ान मुअज़्ज़न की। कहते हैं हम अपने काम में लगे हुए हैं। अज़ान दे कि क्या मुश्किल डाल दी है। "गोया उनके दिल दुखते हैं।" अज़ान की आवाज़ सुनके उनके दिल दुखते हैं। फिर कई दफ़ा लोग लोगों को यह भी कहते हैं कि दिखावे के लिए नमाज़ पढ़ने जाना पड़ेगा या दुकान बंद करनी पड़ेगी। "ये लोग बहुत ही काबिल-ए-रहम हैं। कुछ लोग यहां भी ऐसे हैं कि उनकी दुकानें देखो तो मस्जिदों के नीचे हैं परन्तु कभी जा कर खड़े भी तो नहीं होते। "मस्जिद में।'' अतः में यह कहना चाहता हूँ कि ख़ुदा तआला से निहायत सोज़ और जोश के साथ यह दुआ मांगनी चाहिए कि जिस तरह फलों और वस्तुओं की तरह तरह की लज़्ज़तें अता की हैं नमाज़ और इबादत का भी एक-बार मज़ा चखा दें।"

यह दुआ भी अल्लाह तआला से करने की ज़रूरत है तभी लज़्ज़त आएगी कि अल्लाह तआला नमाज़ का वह मज़ा चखा दे और जब मज़ा एक दफ़ा इन्सान को आ जाता है तो फिर उस लज़्ज़त का भी पता लग जाता है, फिर इस तरफ़ तवज्जा भी करता है। "देखो अगर कोई व्यक्ति किसी ख़ूबसूरत को एक आनंद के साथ देखता है तो वह उसे ख़ूब याद रहता है और फिर अगर किसी बदशकल और बुरी शक्ल वाले को देखता है तो इस की सारी हालत बा-एतबार उसके मुजस्सम हो कर सामने आ जाती है। हाँ अगर कोई ताल्लुक़ न हो तो कुछ याद नहीं रहता। इसी तरह बे नमाज़ों के नज़दीक नमाज़ एक बोझ है कि नाहक़ सुबह उठ कर सर्दी में वुज़ू कर के बिस्तर को छोड़ कर कई किस्म की आसाइशों को खो कर पढ़नी पड़ती है। असल बात यह है कि उसे बेज़ारी है वे इस को समझ नहीं सकता। इस लज़्ज़त और राहत से जो नमाज़ में है।" कहने को तो वह मोमिन और मुस्लमान है लेकिन असल में दिल में एक बेज़ारी है जिसको समझ नहीं सकता। इस नमाज़ के मुक़ाबले में इस को राहत में ज़्यादा लज़्ज़त आ रही है। नींद और सोने में ज़्यादा लज़्ज़त आ रही है। फ़रमाया "उसको इत्तिला नहीं है फिर नमाज़ में लज़्ज़त क्योंकर हासिल हो। मैं देखता हूँ कि एक शराबी और नशा बाज़ इन्सान को जब आनंद नहीं आता तो वह पै दर पै प्याले पीता जाता है यहां तक कि उसको एक किस्म का नशा आ जाता है। दानिशमंद और बुज़ुर्ग इन्सान इस से फ़ायदा उठा सकता है और वह यह।" किस तरह फ़ायदा उठाए। इस शराबी के, नशा करने वाले के नशे से क्या फ़ायदा उठा सकता है? अगर मुख़लिस मोमिन है तो इस तरह उठा सकता है "कि नमाज़ पर दवाम करे।"

नमाज़ मुस्तक़िल मिज़ाजी से पढ़ता चला जाये "और पढ़ता जाए यहां तक कि इस को आनंद आ जाए और जैसे शराबी के ज़हन में एक लज़्ज़त होती है जिसका हासिल

करना उस का उद्देश्य होता है इसी तरह से ज़हन में और सारी ताक़तों का रुजहान नमाज़ में उसे आनंद का हासिल करना हो।" दुआ भी करे और कोशिश भी करे। "और फिर एक ख़ुलूस और जोश के साथ कम से कम इस नशा बाज़ के इज़्तिराब और तड़प की मानिंद ही एक दुआ पैदा हो।" दिल में दुआ भी पैदा हो जैसा कि पहले वर्णन हुआ कि अल्लाह तआला से दुआ करे कि अल्लाह तआला मुझे आनंद दे "कि वह लज़्ज़त हासिल हो।" आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "तो मैं कहता हूँ और सच्च कहता हूँ कि निसंदेह निसंदेह वह लज़्ज़त हासिल हो जाएगी।" अगर इस दर्द से दुआ होगी तो लज़्ज़त भी हासिल हो जाएगी।" फिर नमाज़ पढ़ते वक़्त उन मुफ़ाद का हासिल करना भी मलहूज़ हो जो इस से होते हैं और एहसान पेश-ए-नज़र रहे।" फ़रमाया कि اِنَّ الۡحَسَنٰتِ یُذۡہِبۡنَ السَّیِّاٰتِ (हूद : 115) "अल्लाह तआला फ़रमाता है اِنَّ الۡحَسَنٰتِ یُذۡہِبۡنَ السَّیِّاٰتِ कि "नेकियां बदियों को ख़त्म कर देती हैं। अतः उन हसनात को और लज़्ज़ात को दिल में रख कर दुआ करे कि वह नमाज़ जो कि सिद्दीक़ों और मोहसिनों की है वह नसीब करे। यह जो फ़रमाया है اِنَّ الۡحَسَنٰتِ یُذۡہِبۡنَ السَّیِّاٰتِ अर्थात नेकियां या नमाज़ बदियों को दूर करती है या दूसरे मुक़ाम पर फ़रमाया है नमाज़ फ़वाहिश और बुराईयों से बचाती है और हम देखते हैं कि कुछ लोग बावजूद नमाज़ पढ़ने के फिर बदियाँ करते हैं, इस का उत्तर यह है कि वे नमाज़ें पढ़ते हैं परन्तु न रूह और रास्ती के साथ।" अगर कोई असर नहीं हो रहा तो मतलब यह है कि वे नमाज़ें तो पढ़ते हैं परन्तु रूह और रास्ती के साथ नहीं।" वे केवल रस्म और आदत के तौर पर टक्करें मारते हैं। उनकी रूह मुर्दा है। अल्लाह तआला ने उनका नाम हसनात नहीं रखा।" ऐसी नमाज़ें हसनात में शुमार नहीं होतीं।" और यहां जो अहसनात का लफ़्ज़ रखा अस्सलात का शब्द नहीं रखा। इसके होते हुए अर्थ वही हैं। इस की वजह यह है कि ता नमाज़ की ख़ूबी और हुस्न-ओ-जमाल की तरफ़ इशारा करे कि वे नमाज़ बदियों को दूर करती है जो अपने अंदर एक सच्चाई की रूह रखती है और फ़ैज़ की तासीर इस में मौजूद है।

वे नमाज़ निसंदेह निसंदेह बुराईयों को दूर करती है। नमाज़ साथ उठना बैठना और बरख़ास्त का नाम नहीं है।" उठने बैठने का नाम नहीं है। "नमाज़ का उद्देश्य और रूह वह दुआ है जो एक लज़्ज़त और आनंद अपने अंदर रखती है।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 162 से 164 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः इस लज़्ज़त और आनंद को हासिल करने के लिए और इस बीमारी से बाहर निकलने के लिए भी दुआ ज़रूरी है। केवल अपनी दुनियावी ख़ाहिशात को पूरा करने के लिए दुआ न हो बल्कि इस के लिए भी दुआ हो। जिस तरह बीमारी से सेहत याब होने के लिए इन्सान हर चीज़ का इस्तिमाल करता है। ईलाज भी करता है, दुआ भी करता है इसी तरह इस के लिए भी करे।

फिर आप अलैहिस्सलाम नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि नमाज़ को इसी तरह पढ़ो जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पढ़ते थे। जबकि अपनी हाजतों और मुतालिब को मसनून दुआओं के बाद अपनी ज़बान में बेशक अदा करो और ख़ुदा तआला से माँगो। इस में कोई हर्ज नहीं है। इस से नमाज़ कदापि ज़ाए नहीं होती। आजकल लोगों ने नमाज़ को ख़राब कर रखा है। नमाज़ें क्या पढ़ते हैं टक्करें मारते हैं। नमाज़ तो बहुत जल्द मुर्ग़ की तरह ठूंगें मार कर पढ़ लेते हैं और पीछे दुआ के लिए बैठे रहते हैं। हमारे खासतौर पर एशिया में हिन्दुस्तान, पाकिस्तान में यही रिवाज है। नमाज़ जल्दी जल्दी पढ़ी और इस के बाद हाथ उठा के दुआ करने लग गए। फ़रमाया कि नमाज़ का असल मग़ज़ और रूह तो दुआ ही है। नमाज़ से निकल कर दुआ करने से वह असल मतलब कहाँ हासिल हो सकता है। इसी तरह है जिस तरह एक व्यक्ति बादशाह के दरबार में जाए और उस को अपना अर्ज़-ए-हाल करने का अवसर भी हो लेकिन उस वक़्त तो वह कुछ न कहे लेकिन जब दरबार से बाहर आ जाए तो अपनी दरख़ास्त पेश करे। ऐसे क्या फ़ायदा होगा? ऐसा ही हाल उन लोगों का है जो नमाज़ में दर्द के साथ दुआएं नहीं मांगते। तुम को जो दुआएं करनी हों नमाज़ में कर लिया करो और पूरे आदाब को मलहूज़ रखो।

(उद्धरित मल् फ़ूज़ात, पृष्ठ 258 ऐडीशन 1984 ई.)

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें किस तरह सिखाया। एक रिवायत में आता है कि एक व्यक्ति आया और उसने नमाज़ पढ़ी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आ के सलाम किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने फ़रमाया जाओ और दुबारा नमाज़ पढ़ो। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसे देख रहे थे और इस मस्जिद में बैठे हुए थे। मजलिस लगी हुई थी। इस तरह तीन मर्तबा उस से नमाज़ पढ़वाई। तो आख़िर उसने अर्ज़ की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! मैं इस से बेहतर नमाज़ नहीं पढ़ सकता। इसलिए अब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमही मुझे सही तरीक़ बता दें किस तरह नमाज़ पढ़नी है। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने फ़रमाया कि जब तुम नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हो जाओ तो तकबीर कहो। फिर हसब-ए-तौफ़ीक़ क़ुरआन पढ़ो। सूरत फ़ातिहा के साथ क़ुरआन पढ़ो। फिर पूरे संतोष के साथ रुकू करो। यह नहीं कि ज़रा सा झुके और खड़े हो गए। पूरे इतमीनान के साथ रुकू करो। फिर सीधे खड़े हो जाओ। फिर पूरे इतमीनान के साथ सजदा करो और फिर सज्दे से उठकर पूरी तरह बैठो। कुछ लोग केवल सजदा के लिए बीच में दो सज्दों के दरमयान उठते हैं और फिर फ़ौरन दुबारा सज्दे में चले जाते हैं। फ़रमाया पूरी तरह बैठो। इस के बाद दूसरा सजदा करो। इस तरह सारी नमाज़ ठहर ठहर कर, सँवार कर अदा करो।

(सही अल् बुख़ारी ,किताब الاذان،باب امر النبیﷺ...الخ, हदीस 793)

कुछ लोग पूछते हैं कि सँवार कर नमाज़ें किस तरह पढ़ी जाती हैं? तो यह है सँवार कर नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा कि ठहर ठहर कर नमाज़ की जो हर हरकत है उस को पूरा वक़्त दे के आराम से पढ़े।

फिर नमाज़ की हक़ीक़त को समझ कर उसको अदा करने की तरफ़ तवज्जा करने के बाद एक मोमिन का काम है कि क़ुरआन-ए-करीम को भी पढ़े और समझे, उस की तरफ़ तवज्जा रखे। जिस तरह अक्सर की रमज़ान में इस तरफ़ तवज्जा पैदा होती है। तफ़सीर पर भी ग़ौर करो और यह भी एक ज़रीया है रमज़ान को अगले रमज़ान से जोड़ने का। क़ुरआन-ए-करीम पर तवज्जा देनी चाहिए।

क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "अगर हमारे पास क़ुरआन न होता और हदीसों के ये मजमुए ही माया नाज़ ईमान और एतकाद होते तो हम कौमों को शर्मसारी से मुँह भी न दिखा सकते। मैं ने क़ुरआन के शब्द में ग़ौर किया तब मुझ पर खुला कि इस मुबारक लफ़्ज़ में एक ज़बरदस्त भविष्यवाणी है। वह यह है कि यही क़ुरआन अर्थात पढ़ने के लायक़ किताब है और एक ज़माना में तो और भी ज़्यादा यही पढ़ने के काबिल किताब होगी जबकि और किताबें भी पढ़ने में इसके साथ शरीक की जाएँगी। इस वक़्त इस्लाम की इज़्ज़त बचाने के लिए और झूठ का खंडन करने के लिए यही एक किताब पढ़ने के काबिल होगी और अन्य किताबें पुर्णतः छोड़ देने के लायक़ होंगी। फ़ुर्क़ान के भी यही अर्थ हैं। अर्थात यही एक किताब हक़ और झूठ में फ़र्क़ करने वाली ठहरेगी और कोई हदीस की या और कोई किताब इस हैसियत और पाया की नहीं होगी। इस लिए अब सब किताबें छोड़ दो और रात-दिन किताबुल्लाह ही को पढ़ो। बड़ा बेईमान है वह व्यक्ति जो क़ुरआन-ए-करीम की तरफ़ ध्यान न करे और दूसरी किताबों पर ही रात-दिन झुका रहे।

हमारी जमाअत को चाहिए कि क़ुरआन-ए-करीम के शुग़ल और तदब्बुर में जान और वदिल से व्यस्त हो जाएं और हदीसों के शुग़ल को छोड़ दें। बड़े खेद का मुक़ाम है कि क़ुरआन-ए-करीम का वह सम्मान और अध्यन नहीं किया जाता जो हदीस का किया जाता है।

इस वक़्त क़ुरआन-ए-करीम का हर्बा हाथ में लो तो तुम्हारी फ़तह है। इस नूर के आगे कोई ज़ुल्मत ठहर नहीं सकेगी।

(मल् फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 122 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर नेकियों को क़ायम रखने के लिए आप अलैहिस्सलाम ने यह हिदायत फ़रमाई कि दीन को हर हाल में दुनिया पर मुक़द्दम रखो। इस की तफ़सील में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि देखो! दो किस्म के लोग होते हैं। एक तो वे लोग जो इस्लाम क़बूल करके दुनिया के कारोबारों और तिजारतों में व्यस्त हो जाते हैं। शैतान उनके सिर पर सवार हो जाता है। मेरा यह मतलब नहीं कि तिजारत करनी मना है। नहीं। सहाबा तिजारतें भी करते थे परन्तु वे दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखते थे। उन्होंने इस्लाम क़बूल किया तो इस्लाम के प्रमाणित सच्चा इलम जो यक़ीन से उनके दलों को परिपूर्ण कर दे उन्होंने हासिल किया। यही वजह थी कि वे किसी मैदान में शैतान के हमले से नहीं डगमगाए। कोई बात उन को सच्चाई के इज़हार से नहीं रोक सकी। मेरा मतलब इस से केवल यह है कि जो बिल्कुल दुनिया ही के बंदे और ग़ुलाम हो जाते हैं मानो दुनिया की ओर झुक जाते हैं ऐसे लोगों पर शैतान अपना ग़लबा और

क़ाबू पा लेता है।

दूसरे वे लोग होते हैं जो दीन की तरक़्क़ी की (फ़िक्र करते हैं) फ़िक्र में होते हैं। ये वे गिरोह है जो हिज़्बुल्लाह कहलाता है और जो शैतान और उस के लश्कर पर फ़तह पाता है। माल चूँकि तिजारत से बढ़ता है इसलिए ख़ुदा तआला ने भी तलब-ए-दीन और दीन में प्रगति की ख़ाहिश को एक तिजारत ही क़रार दिया है। (दीन को हासिल करना भी अल्लाह तआला ने फ़रमाया एक तिजारत है) इसलिए फ़रमाता हैं هَلۡ اَدُلُّكُمۡ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنۡجِيۡكُمۡ مِّنۡ عَذَابٍ اَلِيۡمٍ (अल् सफ़ : 11) कि अतः क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारत पर अवगत करूँ जो तुम्हें एक दर्दनाक अज़ाब से निजात दे दे। फ़रमाया सबसे उम्दा तिजारत दीन की है जो दर्द-नाक अज़ाब से निजात देती है। अतः मियन भी ख़ुदा तआला के उन्ही अलफ़ाज़ मैं तुम्हें यह कहता हूँ कि هَلۡ اَدُلُّكُمۡ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنۡجِيۡكُمۡ مِّنۡ عَذَابٍ اَلِيۡمٍ- आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह जो दीनी तरक़्क़ी और शौक़ को कम करते हैं मुझे अंदेशा है कि शैतान फिर उन पर क़ाबू न पा ले। कभी इस में सुस्ती नहीं होनी चाहिए। हर एक अमर पर जो समझ न आए आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया पूछना चाहिए ताकि मार्फ़त में ज़्यादती हो। पूछना हराम नहीं है। समझ नहीं आई पूछो। सवाल ज़रूर उठने चाहिऐं। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अमली तरक़्क़ी के लिए भी पूछना चाहिए।

(उद्धरित मल् फूज़ात, पृष्ठ 193-194 ऐडीशन 1984 ई.)

अमली तरक़्क़ी के लिए ज़रूरी है। अतः दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने के लिए जहां ईमान में मज़बूती ज़रूरी है वहां इलमी और अमली तरक़्क़ी भी ज़रूरी है और इस के लिए कोशिश भी करनी चाहिए।

फिर रमज़ान के फ़ैज़ को जारी रखने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें जो तरीक़ बताया वह है आपस के ताल्लुक़ात में जो आला अख़लाक़ दिखाने की रमज़ान में हमने कोशिश की थी उन्हें जारी रखना। आपस में मुहब्बत और भाई चारे को बढ़ाना और एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करना। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत को सफलता नहीं आएगी जब तक आपस में सच्ची हमदर्दी न करें।

जो पूरी ताक़त दी गई है वह कमज़ोर से मुहब्बत करे। मैं जो यह सुनता हूँ कि कोई किसी की लग़्ज़िश देखता है तो इस से अख़लाक़ से पेश नहीं आता बल्कि नफ़रत और कराहत से पेश आता है हालाँकि चाहिए तो यह कि इस के लिए दुआ करे, मुहब्बत करे और उसे नरमी और अख़लाक़ से समझाए परन्तु बजाय उसके उपद्रव में ज़्यादा हो जाता है। अगर क्षमा न किया जाए, हमदर्दी न की जाए इस तरह पर बिगड़ते बिगड़ते अंजाम बद हो जाता है। ख़ुदा तआला को यह मंज़ूर नहीं। जमाअत तब बनती है कि कुछ कुछ की हमदर्दी कर के पर्दापोशी की जाए। जब ये हालत पैदा हो तब एक वजूद हो कर एक दूसरे के हाथ, पाँव हो जाते हैं और अपने बारे हक़ीक़ी भाई से बढ़कर समझते हैं।

आपस में मुहब्बत हक़ीक़ी भाईयों से बढ़कर होनी चाहिए। ऐसी हमदर्दी हो। फ़रमाया कि उदाहरणतः एक व्यक्ति का बेटा हो और उस से कोई क़सूर सरज़द हो तो इस की पर्दापोशी की जाती है और उस को अलग समझाया जाता है। भाई की पर्दापोशी करता है। भाई दूसरे भाई की पर्दापोशी करता है अगर हक़ीक़ी भाई हों तो। कभी नहीं चाहता कि इस के लिए इश्तिहार दे कि उसने ये ज़ुलम किया, यह गुनाह किया। फिर जब ख़ुदा तआला भाई बनाता है तो क्या भाईयों के हुक़ूक़ यही हैं? दुनिया के भाई भाईचारे का मार्ग नहीं छोड़ते तो फिर तुम लोग क्यों छोड़ो। फ़रमाया कई बार इन्सान जानवर बंदर या कुत्ते से भी सीख लेता है। यह तरीक़ नामुबारक है कि अंदरूनी फूट हो। ख़ुदा तआला ने सहाबा को भी यही तरीक़ और नेअमत भाईचारा याद दिलाया है। अगर वे सोने के पहाड़ भी ख़र्च करते तो वे उख़ुवत उनको नहीं मिलती जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़रीया उनको मिली। इसी तरह पर ख़ुदा तआला ने ये सिलसिला क़ायम किया है और इसी किस्म की भाईचारा वह यहां क़ायम करेगा। ख़ुदा तआला पर मुझे बहुत बड़ी उम्मीदें हैं। उसने वादा किया है कि جَاعِلُ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡكَ فَوۡقَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ (आले इमरान : 56) मैं यक़ीनन जानता हूँ कि वह एक जमाअत क़ायम करेगा जो क़ियामत तक मुनकिरों पर ग़ालिब रहेगी परन्तु यह दिन जो इबतिला के दिन हैं और कमज़ोरी के दिन हैं। हर एक व्यक्ति को अवसर देते हैं कि वे अपनी इस्लाह करे और अपनी हालत में तबदीली करे। देखो एक दूसरे का शिकवा करना, दिल-आज़ारी करना और सख़्त-ज़बानी करके दूसरों के दिल को सदमा पहुंचाना और कमज़ोरों और आजिज़ों को हक़ीर समझना सख़्त गुनाह है।

(उद्धरित मल् फूज़ात भाग तीन, पृष्ठ 348-349 ऐडीशन 1984 ई.)

फ़रमाया कि "हमारी जमाअत में शहज़ोर और पहलवानों की ताक़त रखने वाले मतलूब नहीं "पहलवान नहीं हमें चाहिऐं "बल्कि ऐसी क़ुव्वत रखने वाले मतलूब हैं जो तबदील-ए-अख़लाक़ के लिए कोशिश करने वाले हों। यह एक प्रमाणित बात है कि वे पहलवान और ताक़त वाला नहीं जो पहाड़ को जगह से हटा सके। नहीं नहीं। असली बहादुर वही है जो तबदील अख़लाक़ पर सामर्थ्य पाए। अतः याद रखो कि सारी हिम्मत और क़ुव्वत तबदील अख़लाक़ में खर्च करो क्योंकि यही हक़ीक़ी क़ुव्वत और दिलेरी है।" (उद्धरित मल् फूज़ात भाग प्रथम, पृष्ठ 140 ऐडीशन 1984 ई.)

आपस में मुहब्बत और प्यार और एक दूसरे के हक़ अदा करने, आजिज़ी और मिस्कीनी से ज़िंदगी गुज़ारने के बारे में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "तक़्वा वालों के लिए यह शर्त है कि व् अपनी ज़िंदगी ग़ुर्बत और मिस्कीनी में बसर करें।

यह तक़्वा की एक शाख़ है जिसके ज़रीया से हमें नाजायज़ ग़ज़ब का मुक़ाबला करना है। बड़े बड़े आरिफ़ और सिद्दीक़ों के लिए आख़िरी और कड़ी मंज़िल ग़ज़ब से बचना ही है। घमंड ग़ज़ब से पैदा होता है और ऐसा ही कभी स्वयं घमंड का नतीजा होता है।' अर्थात ग़ुस्सा तकब्बुर और ग़रूर से पैदा होता है या ग़ुस्सा की वजह से तकब्बुर और ग़रूर पैदा हो जाता है।" क्योंकि ग़ज़ब उस वक़्त होगा जब इन्सान अपने नफ़्स को दूसरे पर प्राथमिकता देता है। मैं नहीं चाहता कि मेरी जमाअत वाले आपस में एक दूसरे को छोटा या बड़ा समझें या एक दूसरे घमंड करें या एक दुसरे के अपमान से देखें। ख़ुदा जानता है कि बड़ा कौन है या छोटा कौन है। यह एक किस्म की तहक़ीर है। जिसके अंदर हक़ारत है, डर है कि यह हक़ारत बीज की तरह बढ़े और इस की हलाकत का माध्यम हो जाए। कुछ आदमी बड़ों को मिलकर बड़े अदब से पेश आते हैं लेकिन बड़ा वह है जो मिस्कीन की बात को मिस्कीनी से सुने। इस की दिलजोई करे। उस की बात की इज़्ज़त करे। कोई चिढ़ की बात मुँह पर न लाए कि जिससे दुख पहुंचे।" खासतौर पर बड़ों को, ओहदेदारों को भी इस बात का ख़्याल रखना चाहिए कि हर व्यक्ति से जिससे वे बात करते हैं बड़े आराम से और प्यार से और मुहब्बत से किया करें।" ख़ुदा तआला फ़रमाता है وَلَا تَنَابَزُوۡا بِالۡاَلۡقَابِ ؕ بِئۡسَ الِاسۡمُ الۡفُسُوۡقُ بَعۡدَ الۡاِيۡمَانِ ۚ وَمَنۡ لَّمۡ يَتُبۡ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوۡنَ (अल् हुजरात : 12) तुम एक दूसरे का चिढ़ के नाम न लो। यह कार्य झूठों और बुरे कर्म करने वालों का है। जो व्यक्ति किसी को चढ़ाता है वह नहीं मरेगा जब तक बह ख़ुद इसी तरह मुबतला नहीं होगा। अपने भाईयों को हक़ीर न समझो। जब एक ही चशमा से समस्त पानी पीते हो तो कौन जानता है कि किस की क़िस्मत में ज़्यादा पानी पीना है। मुकर्रम और मुअज़्ज़म कोई दुनियावी उसूलों से नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला के नज़दीक बड़ा वह है जो मुत्तक़ी है। اِنَّ اَكۡرَمَكُمۡ عِنۡدَ اللّٰهِ اَتۡقٰىكُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيۡمٌ خَبِيۡرٌ (मल् फूज़ात, भाग अव्वल, पृष्ठ 36 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः रमज़ान में जो तक़्वा पैदा किया है इस तकवा का तक़ाज़ा यही है कि आपस के ताल्लुक़ात को भी बेहतर से बेहतर किया जाए और एक दूसरे से मुआमलात में भी अख़लाक़ और हुस्न-ए-अख़लाक़ का नमूना दिखाया जाए।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "मैं पहले बहुत दफ़ा कह चुका हूँ कि तुम बाहम इत्तिफ़ाक़ रखो और इजतिमा करो। ख़ुदा तआला ने मुस्लमानों को यही तालीम दी थी कि तुम वजूद-ए-वाहिद रखो वर्ना हवा निकल जाएगी। नमाज़ में एक दूसरे के साथ जुड़ कर खड़े होने का हुक्म इसी लिए है कि बाहम इत्तिहाद हो। बिजली की ताक़त की तरह एक की ख़ैर दूसरे में सरायत करेगी। अगर इख़तेलाफ़ हो, इत्तिहाद न हो तो फिर बेनसीब रहोगे।"

आजकल के हालात की वजह से अगर एक फ़ासिला दिया जाता है तो यह ज़रूरत की वजह से है। इस को बच्चे भी और कुछ दूसरे भी यह न समझ लें कि यह मुस्तक़िल चीज़ बन गई है। हालात आहिस्ता-आहिस्ता ठीक हो रहे हैं तो फ़ासले भी कम हो रहे हैं और इं शा अल्लाह नॉर्मल हालात भी आ जाऐंगे। असल चीज़ यही है कि जब मस्जिद में सफ़ें हों तो एक दूसरे से जुड़ के खड़ा हुआ जाए। इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए। हाँ ज़रूरत के तहत आरिज़ी arrangement की गई थी। इसलिए फ़ासिला दिया गया है ताकि कम से कम बाजमाअत नमाज़ें जारी रहें।

और उम्मीद है इंशा-ए-अल्लाह तआला जिस तरह हालात ठीक हो रहे हैं जल्दी नॉर्मल हालात आ जाऐंगे।

बहरहाल आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि आपस में मुहब्बत करो और एक दूसरे के लिए ग़ायबाना दुआ करो।" बड़ी अहम बात है। एक दूसरे के लिए ग़ायबाना दुआ करो। चाहे तुम्हें कोई दुआ के लिए कहता है या नहीं कहता। जानते हो या नहीं जानते।

उमूमी तौर पर जमाअत के अफ़राद एक दूसरे के लिए या जमाअत के लिए जमाअत के रूप में दुआ करें तो यह बहुत बड़ी नेकी है। फ़रमाया कि "अगर एक व्यक्ति ग़ायबाना दुआ करे तो फ़रिश्ता कहता है कि तेरे लिए भी ऐसा ही हो। कैसी आला दर्जा की बात है। अगर इन्सान की दुआ मंज़ूर न हो तो फ़रिश्ता की तो मंज़ूर होती है। मैं नसीहत करता हूँ और कहना चाहता हूँ कि आपस में इख़तिलाफ़ न हो।" फ़रमाया "मैं दो ही मसले लेकर आया हूँ। अव्वल ख़ुदा की तौहीद इख़तियार करो दूसरे आपस में मुहब्बत और हमदर्दी ज़ाहिर करो।

वह आचरण दिखलाओ कि ग़ैरों के लिए करामत हो। यही दलील थी जो सहाबा रज़ियल्लाहु अंहो में पैदा हुई थी। كُنْتُمْ اَعْدَاۤءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ (आले इमरान : 104) "कि तुम एक दूसरे के दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे दिलों को आपस में बांध दिया।" याद रखो आपसी प्रेम एक एजाज़ है। याद रखो जब तक तुम में हर एक ऐसा न हो कि जो अपने लिए पसंद करता है वही अपने भाई के लिए पसंद करे वह मेरी जमाअत में से नहीं है। वह मुसीबत और बला में है। उस का अंजाम अच्छा नहीं।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ : 48)

फिर ख़द तआला से मुहब्बत की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "ख़ुदा के साथ मुहब्बत करने से क्या मुराद है? यही कि अपने माता पिता, पत्नी, अपनी औलाद, अपने नफ़स उद्देश्य हर चीज़ पर अल्लाह तआला की रज़ा को मुक़द्दम कर लिया जाए। इस लिए क़ुरआन शरीफ़ में आया है। فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا (अल् बकरः : 201) अर्थात् अल्लाह तआला को ऐसा याद करो कि जैसा तुम अपने बापों को याद करते हो बल्कि इस से भी ज़्यादा और सख़्त दर्जा की मुहब्बत के साथ याद करो।" फ़रमाया कि "असल तौहीद को क़ायम करने के लिए ज़रूरी है कि ख़ुदा तआला की मुहब्बत से पूरा हिस्सा लो और यह मुहब्बत साबित नहीं हो सकती जब तक अमली हिस्सा में कामिल न हो।" अमली तौर पर भी मुहब्बत करनी होगी, इज़हार करना होगा।" निरी ज़बान से साबित नहीं होती। अगर कोई मिस्री का नाम लेता रहे तो कभी नहीं हो सकता कि वह मीठा काम हो जाए।" उस का मुँह मीठा नहीं हो जाता अगर केवल चीनी का नाम ले-ले, शूगर का नाम ले-ले तो मीठा हो जाएगा। नहीं।" या अगर ज़बान से किसी की दोस्ती का एतराफ़ और इक़रार करे परन्तु मुसीबत और वक़्त पड़ने पर उसकी इमदाद और दस्त-गीरी से बचता फिरे तो वह सच्चा दोस्त नहीं ठहर सकता। इसी तरह पर अगर ख़ुदा तआला की तौहीद का निरा ज़बानी ही इक़रार हो और उसके साथ मुहब्बत का भी ज़बानी ही इक़रार मौजूद हो तो कुछ फ़ायदा नहीं बल्कि यह हिस्सा ज़बानी इक़रार के बजाय अमली हिस्सा को ज़्यादा चाहता है। इस से यह मतलब नहीं कि ज़बानी इक़रार कोई चीज़ नहीं है। नहीं। मेरा उद्देश्य यह है कि ज़बानी इक़रार के साथ अमली तसदीक़ लाज़िमी है। इस लिए ज़रूरी है कि ख़ुदा की राह में अपनी ज़िंदगी वक़्फ़ करो और यही इस्लाम है। यही वह उद्देश्य है जिस के लिए मुझे भेजा गया है। अतः जो इस वक़्त इस चशमा के नज़दीक नहीं आता जो ख़ुदा तआला ने इस ग़रज़ के लिए जारी किया है वह निसंदेह बेनसीब रहता है। अगर कुछ लेना है और मक़सद को हासिल करना है तो तालिब-ए-सादिक़ को चाहिए कि वह चशमा की तरफ़ बढ़े और आगे क़दम रखे और इस चलते हुए स्रोत के किनारे अपना मुँह रख दे और यह हो नहीं सकता जब तक ख़ुदा तआला के सामने ग़ैरियत का चोला उतार कर आस्ताना रबूबियत पर न गिर जावे और यह वादा न कर ले कि ख़ाह दुनिया की वजाहत जाती रहे और मुसीबतों के पहाड़ टूट पढ़ें तो भी ख़ुदा को नहीं छोड़ेगा और ख़ुदा तआला की राह में हर किस्म की क़ुर्बानी के लिए तैयार रहेगा। इब्राहीम अलैहिस्सलाम का यही अज़ीमुश्शान इख़लास था कि बेटे की क़ुर्बानी के लिए तैयार हो गया। इस्लाम का मंशा यह है कि बहुत से इबराहीम बनाए।"

यही अल्लाह तआला ने, क़ुरआन शरीफ़ ने इबराहीम की ख़ूबी वर्णन फ़रमाई है कि वे वफ़ादार थे।" अतः तुम में से हर एक को कोशिश करनी चाहिए कि इब्राहीम बनो मैं तुम्हें सच्च सच्च कहता हूँ कि वली परस्त न बनो बल्कि वली बनो और पीर परस्त न बनो बल्कि पीर बनो तुम उन राहों से आओ।" पीर बन के यह नहीं कि पीरों की तरह आपसी दुश्मनी और तकब्बुर पैदा हो जाए बल्कि आजिज़ी इनकेसारी पैदा करो। वफ़ादारी पैदा करो। यह मुराद है इस से। आजकल के पीरों की तरह दुनिया-दारी के इज़हार इस से मुराद नहीं है। फ़रमाया कि "निसंदेह वे तंग राहें हैं" तुम इन राहों से आओ" लेकिन उनसे दाख़िल हो कर राहत और आराम मिलता है परन्तु य अह ज़रूरी है कि इस दरवाज़ा से बिल्कुल हल्के हो कर गुज़रना पड़ेगा। अगर बहुत बड़ी गठरी सिर पर हो तो मुश्किल है। अगर गुज़रना चाहते हो तो इस गठरी को जो दुनिया के ताल्लुक़ात और दुनिया को दीन पर मुक़द्दम करने की गठरी है फेंक दो। हमारी जमाअत ख़ुदा को ख़ुश करना चाहती है तो इस को चाहिए कि इस को फेंक दे। तुम निसंदेह याद रखो कि अगर तुम में वफ़ा-दारी और इख़लास न हो तो तुम झूठे ठहरोगे और ख़ुदा तआला के हुज़ूर रास्तबाज़ नहीं बन सकते। ऐसी सूरत में दुश्मन से पहले वे हलाक होगा जो वफ़ा-दारी को छोड़कर ग़द्दारी की राह इख़तियार करता है। ख़ुदा तआला धोखा नहीं खा सकता और न कोई उसे फ़रेब दे सकता है। इस लिए ज़रूरी है कि तुम सच्चा इख़लास और सिदक़ पैदा करो।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 3, पृष्ठ 188 से 190 ऐडीशन 1984 ई.)

आप इस बात की भी वज़ाहत फ़रमाई कि सब्र और दुआ से सच्चा इख़लास मिलता है।

अतः उस को हासिल करने की कोशिश करो और इस के लिए मुस्तक़िल मिज़ाजी से अल्लाह तआला के दर पर झुके रहने की ज़रूरत है। अतः हमें अपने हर आने वाले दिन, वफ़ा-दारी के साथ ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ में बढ़ाते चले जाने की कोशिश करने वाला होना चाहिए।

यह हमारा लाहे-अमल है : नमाज़ों की तरफ़ मुस्तक़िल तवज्जा उनको सँवार कर अदा करना, क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ना समझना और इस के अहकामात पर अमल करना, एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करना, और तौहीद का क़ियाम करना, असल मैं तो एक हक़ीक़ी मोमिन का हर काम और फ़ेअल ही तौहीद के क़ियाम के लिए होता है और होना चाहिए और यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने का उद्देश्य था और इस बात का आप अलैहिस्सलाम ने बार-बार इज़हार फ़रमाया है। अतः इस बात को समझने की ज़रूरत है अन्यथा केवल बैअत कर लेना तो कोई फ़ायदा नहीं देता। यह बात बड़ी खोल कर मुतअद्दिद जगह आप अलैहिस्सलाम ने वर्णन फ़रमाई है। उदहारणतः एक जगह फ़रमाया कि "जो बैअत और ईमान का दावा करता है इस को टटोलना चाहिए कि क्या मैं छिलका ही हूँ या मग़ज़? जब तक मग़ज़ पैदा न हो ईमान, मुहब्बत, इताअत, बैअत, एतिक़ाद, मुरीदी, इस्लाम का

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

पृष्ठ 3 का शेष

मुद्दई सच्चा मुद्दई नहीं है। याद रखो कि यह सच्ची बात है।'' यह सब दावा जो मुहब्बत करने का या ईमान का या इताअत का या बैअत का है ये सब दावे हैं सच्चा दावा नहीं होगा। याद रखो कि सच्ची बात यह है "कि अल्लाह तआला के हुज़ूर मग़ज़ के सिवा छिलके की कुछ भी क़ीमत नहीं। ख़ूब याद रखो कि मालूम नहीं मौत किस वक़्त आ जाए लेकिन यह बात निश्चित है कि मौत ज़रूर है। अतः निरे दावा पर कदापि किफ़ायत न करो और ख़ुश न हो जाओ। वे हरगिज़ हरगिज़ लाभदायक चीज़ नहीं जब तक इन्सान अपने आप पर बहुत मौतें वारिद न करे और बहुत सी तबदीलियों और इन्क़िलाबात में से हो कर न निकले वे इन्सानियत के असल मक़सद को नहीं पा सकता।"

(मल् फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 167 ऐडीशन 1984 ई.)

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "दुनिया की हालत को देखो कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो अपने अमल से यह दिखाया कि मेरा मरना और जीना सब कुछ अल्लाह तआला के लिए है और या अब दुनियामें मुस्लमान मौजूद हैं। किसी से कहा जाए कि क्या तू मुस्लमान है? तो कहता है अल्हम्दुलिल्ला। जिस का कलिमा पढ़ता है इस की ज़िंदगी का उसूल तो ख़ुदा के लिए था मगर यह दुनिया के लिए जीता है और दुनिया ही के लिए मरता है।" आम मुस्लमान। "उस वक़्त तक कि अंतिम समय शुरू हो जाए।" जब मौत आती है इस वक़्त अल्लाह याद आता है।'' दुनिया ही उस का उद्देश्य, महबूब, मतलूब रहती है फिर क्योंकर कह सकता है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इत्तिबा करता हूँ। यह बड़ी गौरतलब बात है। इस को सरसरी न समझो। मुस्लमान बनना आसान नहीं है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इताअत और इस्लाम का नमूना जब तक अपने अंदर पैदा न करो मुतमइन न हो। यह केवल छिलका ही छिलका है। अगर इसके आरंभिक मुस्लमान कहलाते हो।" अगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इत्तिबा के बग़ैर मुस्लमान कहलाते हो तो फिर यह तो कोई बात नहीं। केवल छिलका है। "नाम और छिलके पर ख़ुश हो जाना दानिशमंद का काम नहीं है।" एक मिसाल दी आप ने "किसी यहूदी को एक मुस्लमान ने कहा कि तू मुस्लमान हो जा। उसने कहा कि तू केवल नाम ही पर ख़ुश न हो जा।" कह दे मुस्लमान है तो तू इस बात पर ख़ुश है। यहूदी ने कहा कि "मैं ने अपने लड़के का नाम ख़ालिद रखा था और शाम से पहले ही उसे दफ़न कर आया।" वह तो हमेशा रहने वाला न हुआ। लंबी ज़िंदगी भी उसने न पाई।

अतः हक़ीक़त को तलब करो। निरे नामों पर राज़ी न हो जाओ। किस क़दर शर्म की बात है कि इन्सान अज़ीमुश्शान नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का उम्मती कहला कर काफ़िरों की सी ज़िंदगी बसर करे। तुम अपनी ज़िंदगी में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नमूना दिखाओ। वही हालत पैदा करो और देखो अगर वही हालत नहीं है तो तुम शैतान के चेले हो।'' बहुत बड़ी चेतावनी है कि शैतान के पैरौ बन जाओगे। उस के पीछे चलने वाले बन जाओगे तुम।'' उद्देश्य यह बात अब बख़ूबी समझ में आ सकती है कि अल्लाह तआला का महबूब होना इन्सान की ज़िंदगी की उद्देश्य होना चाहिए क्योंकि जब तक अल्लाह तआला का महबूब न हो और ख़ुदा की मुहब्बत न मिले कामयाबी की ज़िंदगी बसर नहीं कर सकता और यह अमर पैदा नहीं होता जब तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्ची इताअत और अनुसरण न करो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अमल से दिखा दिया है कि इस्लाम क्या है? अतः तुम वह इस्लाम अपने अंदर पैदा करो ताकि तुम ख़ुदा के बनू।'' (मल् फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 187-188 ऐडीशन 1984 ई.)

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "याद रखो हमारी जमाअत इस बात के लिए नहीं है जैसे आम दुनियादार ज़िंदगी बसर करते हैं। निरा ज़बान से कह दिया कि हम इस सिलसिले में दाख़िल हैं और अमल की ज़रूरत न समझी जैसे बदक़िस्मती से मुस्लमानों का हाल है कि पूछो तुम मुस्लमान हो? तो कहते हैं शुक्र अलहमदु लिल्लाह। परन्तु नमाज़ नहीं पढ़ते और अल्लाह के निशानों का सम्मान नहीं करते। अतः मैं तुम से यह नहीं चाहता कि केवल ज़बान से ही इक़रार करो और अमल से कुछ न दिखाओ। यह निकम्मी हालत है। ख़ुदा तआला उस को पसंद नहीं करता और दुनिया की इस हालत ने ही तक़ाज़ा किया कि ख़ुदा तआला ने मुझे इस्लाह के लिए खड़ा किया है। अतः अब अगर कोई मेरे साथ ताल्लुक़ रख कर भी अपनी हालत की इस्लाह नहीं करता और अमली कुव्वतों को तरक़्क़ी नहीं देता बल्कि ज़बानी इक़रार ही को काफ़ी समझता है वह गोया अपने अमल से मेरी अदम ज़रूरत पर-ज़ोर देता है।"

अमल से यह कह रहा है कि मसीह मौऊद के आने की कोई ज़रूरत नहीं थी।'' फिर तुम अगर अपने अमल से साबित करना चाहते हो कि मेरा आना व्यर्थ है तो फिर मेरे साथ ताल्लुक़ करने के क्या मअनी हैं? मेरे साथ ताल्लुक़ पैदा करते हो तो मेरी अग़राज़-ओ-मक़ासिद को पूरा करो और वह यही हैं कि ख़ुदा के हुज़ूर अपना इख़लास और वफ़ा-दारी दिखाओ और क़ुरआन शरीफ़ की तालीम पर इसी तरह अमल करो जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कर के दिखाया और सहाबा ने किया। क़ुरआन शरीफ़ के सही मंशा को मालूम करो और इस पर अमल करो। ख़ुदा तआला के हुज़ूर उतनी ही बात काफ़ी नहीं हो सकती कि ज़बान से इक़रार कर लिया और अमल में कोई रोशनी और सरगर्मी न पाई जाए। याद रखो कि वे जमाअत जो ख़ुदा तआला क़ायम करनी चाहता है वह अमल के बिना ज़िंदा नहीं रह सकती। यह वह अज़ीमुश्शान जमाअत है जिसकी तैयारी हज़रत-ए-आदम के वक़्त से शुरू हुई। कोई नबी दुनिया में नहीं आया जिसने इस दावत की ख़बर न दी हो। अतः उस की क़दर करो और इस की क़दर यही है कि अपने अमल से यह साबित कर के दिखाओ कि सच्चो का गिरोह तुम हो।'' (मल् फ़ूज़ात, भाग 3, पृष्ठ 370-371 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः यह साबित करना होगा। अतः अगर हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत इस यक़ीन के साथ की है कि आप मसीह-ओ-महदी हैं जिनके आने की भविष्यवाणी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई थी तो हमें अपने अंदर एक पाक तबदीली पैदा करनी होगी, एक इन्क़िलाब पैदा करना होगा। दुनिया के लिए एक उदाहरण बनना होगा। अल्लाह के हक़ूक और इंसानों के हक़ूक की अदायगी के मयार क़ायम करने होंगे। रमज़ान में जो हमने तर्बीयत हासिल की है इस को साल के बाक़ी हिस्सों महीनों में भी जारी रखना होगा। यह जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अलफ़ाज़ में एक लाहे-अमल मैंने सामने रखा है इस पर अमल करने की भी भरपूर कोशिश करनी होगी। अपनी नमाज़ों को सँवार कर अदा करना होगा। क़ुरआन-ए-करीम पर अमल करना होगा। एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने होंगे। तौहीद के क़ियाम के लिए हर क़ुर्बानी देनी होगी तभी हम बैअत का हक़ अदा करने वाले होंगे। अल्लाह तआला हमें उस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दुआएं भी करें। दुनिया के लिए भी दुआएं करें कि दुनिया के हालात बेहतर हों। आपस में जो दुश्मनीयां चल रही हैं, मुल्क मुल्क पर हमले कर रहे हैं वे अक़्ल के नाख़ुन लें और इन चीज़ों से बाज़ आ जाएं अन्यथा दुनिया बहुत ज़्यादा तबाही की तरफ़ जा रही है और अपने पैदा करने वाले ख़ुदा को यह पहचान लें तो तभी इस से निकल सकते हैं।

इसी तरह असीरान, अहमदी असीरान जो हैं उन के लिए दुआ करें। पाकिस्तान में अहमदियों के जो हालात हैं उन के लिए दुआ करें। दुनिया के कुछ और देशों में हालात हैं उन के लिए दुआ करें। अफ़ग़ानिस्तान के असीरान हैं उन के लिए दुआ करें। अल-जज़ायर के असीरान हैं उन के लिए दुआ करें। पाकिस्तान में तो क़ानून की वजह से उनकी हर जगह और फिर यह कि मौलवी का ख़ौफ़ या अवाम के नाम पर अवाम का ख़ौफ़ जो है वह जजों को सही फ़ैसला भी करने की तौफ़ीक़ नहीं देता। अल्लाह तआला हालात बेहतर करे और पाकिस्तान में भी अहमदी आज़ादी से रहने लगें।

नमाज़ के बाद में एक जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा। हाज़िर जनाज़ा मुकर्रम अब्दुल बाक़ी अरशद साहिब का है जो इन दिनों में अल् शिर्कतुल इस्लामिया यू.के के चेयरमैन थे। डाक्टर अब्दुल हमीद साहिब फैसलाबाद के थे। 27 अप्रैल को उनकी 88 साल की उम्र में वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा हज़रत मियां चिराग़ दीन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के पड़ पोते थे और हज़रत मुहम्मद हुसैन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु मरहमे ईसा वाले और मियां मुहम्मद यूसुफ़ साहिब जो एक वक़्त में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के प्राईवेट सैक्रेटरी भी रहे हैं उनके ख़ानदान में से थे। अरशद बाक़ी साहिब 1955 ई. में इंग्लिस्तान आए और यहां इलैक्ट्रीकल इंजनीयरिंग की। मस्जिद फ़ज़ल में ही यह अपनी पत्नी के साथ रहते थे। फिर1963 ई. में मुलाज़मत मिली तो सऊदी अरब चले गए और 72 ई. तक वहां रहे। सऊदी अरब में क़ियाम के दौरान आपको हज और उमरा पर आने वाले अहमदियों की ख़िदमत करने की भी तौफ़ीक़ मिली जिनमें कुछ सहाबा भी शामिल थे। सऊदी अरब में क़ियाम के दौरान अहमदी होने की वजह से असीराने राहे मौला होने की सआदत भी उनको मिली। उनको हुकूमत की तरफ़ से ऑफ़र हुई कि अहमदियत से इन्कार कर दें तो ठीक है रिहाई हो जाएगी। आपने असीरी बर्दाश्त कर ली लेकिन अहमदियत

छोड़ने से इन्कार कर दिया बहरहाल 1972 ई. में उनको मुल्क से निकाल दिया गया फिर आप यू.के आ गए। यहां आने के बाद आख़िरी सांस तक उन्होंने जमाअत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। मुख़्तलिफ़ ओहदों पर काम किया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह ने जब हिज्रत की है तो यह उनको लेने के लिए हॉलैंड भी गए थे। फिर वह हॉलैंड से यहां यूके उनके साथ ही आए थे। सैक्रेटरी जायदाद के तौर पर यू.के में उनको काम की तौफ़ीक़ मिली। इस्लामाबाद की ज़मीन जो ख़रीदी गई है इस में भी उनका काफ़ी किरदार था। नायब अमीर यू.के के तौर पर भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। अफ़्सर जलसा सालाना यू.के, चेयरमैन अफ़्रीक़ा ट्रेड, चेयरमैन अल् शिर्कतुल इस्लामिया लंबा अरसा ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। पीछे रहने वालों में दो बेटे और दो बेटियां हैं। उनके एक बेटे नबील अरशद साहिब यहां जमाअत की काफ़ी अच्छी ख़िदमत करते हैं।

उनके बारे में दफ़्तर के साबिक़ा कारकुन मुबश्शिर ज़फ़र साहिब कहते हैं कि बावजूद इसके कि रज़ाकाराना ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिल रही थी। जमाअत से कोई अलाउंस नहीं लेते थे लेकिन बड़ी ज़िम्मेदारी से काम करते थे। वक़्त के बड़े पाबंद थे। रोज़ाना आठ दस घंटे दफ़्तर में आ के बावजूद वृद्ध होने के बैठते थे। बीमारी की भी पर्वा नहीं की। कहते हैं दूसरी बात यह थी कि अपना काम अपने हाथ से करने की उनको बड़ी आदत थी। चाय की प्याली तक ख़ुद बनाने की कोशिश करते थे। अगर उनको चाय की प्याली बना के दे दो तो फिर यह किसी को अपने बर्तन धोने नहीं देते थे और ख़ुद ही धोते थे। और बाअज़ दफ़ा लोग दोपहर के खाने के वक़्त वहां डीइर पार्क में मेज़ पर कुछ बर्तन छोड़ जाते थे तो यह किसी को कहने की बजा-ए-ख़ुद ही उठा देते और मेज़ की सफ़ाई कर देते थे। बाअज़ दफ़ा अगर ज़रूरत होती, टायलट की सफ़ाई करने वाला नहीं आता तो टायलट की सफ़ाई भी कर दिया करते थे। ऐसे अफ़्सर थे जिन्हों ने बड़ी आजिज़ी से काम किया और बड़ी मेहनत से काम किया। हाफ़िज़ा भी बहुत अच्छा था और जमाती धन और जो भी ज़िम्मेदारियाँ थीं उनको आख़िर वक़्त तक बड़े अहसन रंग में अदा करते रहे। नमाज़ों की बड़ी पाबंदी करने वाले, बाजमाअत अदा करने वाले, ख़िलाफ़त का बहुत ज़्यादा एहतिराम, ख़िलाफ़त की तरफ़ से अगर कोई हिदायत चली जाती तो ख़ुद चाहे उनकी ज़ाती राय इस से मुख़्तलिफ़ भी होती लेकिन फ़ौरन शरह सदर के साथ ख़ुशी से इस को फ़ौरी तौर पर तस्लीम कर लेते और अपनी राय, मश्वरा भी यह भूल जाते। वदूद मलिक साहिब कहते हैं कि मैं छोटा था, उनसे बहुत ज़्यादा छोटा हूँ लेकिन इस के बावजूद जब भी कभी गया बड़ी शफ़क़त से राहनुमाई की और बड़ी आजिज़ी से पेश आए और मुझसे इस तरह पेश आते थे जिस तरह में उम्र में छोटा नहीं बल्कि बराबर ही हूँ।

मुनीर उद्दीन शमस साहिब ने भी उनके बारे में लिखा है कि इस्लामाबाद के घरों की ज़रूरीयात का पता करना शुरू में हज़रत ख़लीफ़ तुल-मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह ने उनके सपुर्द किया था। इस को बड़े अहसन रंग में उन्होंने अंजाम दिया। इसी तरह अल् शिर्कतुल इस्लामिया की ज़िम्मेदारियाँ भी बड़े अहसन रंग में आख़िर तक अंजाम देते रहे। एम. टी. ए के साथ भी उनका राबिता था और एम.टी ए के जो माली मुआमलात थे या contract इत्यादि के काम भी इस में भी उनका काफ़ी किरदार है। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। उनके बच्चों को भी ख़िदमत दीन की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और इख़लास और वफ़ा के साथ जमाअत और ख़िलाफ़त से वाबस्ता रखे। नमाज़ के बाद जैसा कि मैं ने कहा जनाज़ा हाज़िर है। मैं बाहर जा के नमाज़ जनाज़ा पढ़ाऊंगा।

★ ★ ★

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

﴿ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار﴾ (SINCE 1964)

क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निमार्ण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें

(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)

contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681

e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com

पृष्ठ 5 का शेष

दाख़िल होना है।

एक बच्चे ने प्रश्न किया कि हुज़ूर का पसंदीदा खेल कौन सा है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अब तो कोई खेल नहीं है पहले क्रिकेट और बैडमिंटन खेल लिया करता था अब कोई नहीं है।

एक बच्चे ने प्रश्न किया जब फ़ौत हो कर ख़ुदा के पास जाएंगे तो क्या ख़ुदा को देख सकते हैं।

इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि जो फ़ौत हो कर गए हैं वही बता सकते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : ख़ुदा तआला तो इस संसार में अपनी क़ुदरतों से नज़र आता है। संसार की सुन्दरता ख़ुदा की क़ुदरत ही है। हज़रत नवाब मुबारका बेग़म साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने भी अपनी एक नज़म में ख़ुदा तआला की ओर से इस बात का उत्तर दिया है कि मुझे तलाश करना है तो मुझे मेरी इस क़ुदरत में देखो, मेरी इस क़ुदरत में देखो।

हज़रत नवाब मुबारका बेग़म साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने यह नज़म डाक्टर अल्लामा सर मुहम्मद इक़बाल की नज़म

कभी ए हक़ीकत मुंतज़िर नज़र आ लिबासे मजाज़ में
कि हज़ारों सज्दे तड़प रहे हैं मेरी जबीं नयाज़ में

के उत्तर में कही थी

हज़रत नवाब मुबारका बेग़म साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा की इस नज़म के कुछ अशआर निमंलिखित हैं।

मुझे देख रिफ़अत कोह में
मुझे देख पस्ती काह में
मुझे देख अजुज़ फ़क़ीर में
मुझे देख शौकत शाह में
मुझे ढूंढ दिल की तड़प में तू
मुझे देख रू-ए-निगार में
कभी बुलबलों की सदा में सुन
कभी देख गुल के निखार में
मेरी एक शान ख़िज़ां में है
मेरी एक शान बहार में
मेरा नूर शक्ल हिलाल में
मेरा हुस्न बदर कमाल में
कभी देख ढंग जमाल में
कभी देख शान-ए-जलाल में
रग-ए-जाँ से हूँ मैं क़रीब-तर
तेरा दिल है किस के विचार में

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अतः ख़ुदा तआला अपनी क़ुदरतों से नज़र आता है اللہ نور السموات والارض ख़ुदा आसमानों-ओ-ज़मीन का नूर है। कोई ज़ाहिरी शक्ल में नज़र आता।

एक बच्चे ने प्रश्न किया कि मैं छट्टी जमाअत में पढ़ता हूँ। मैं आगे जाकर क्या पढ़ूं, कौन सा विषय लूं।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि सैकण्डरी स्कूल में जाओगे तो पता चलेगा कि किस मज़मून में दिलचस्पी है। अगरMaths में दिलचस्पी है तो इंजीनियर बन जाना और यदि ब्यालोजी में दिलचस्पी हो तो डाक्टर बन जाना या फिर रिसर्च में जाने की प्रयास करना।

एक तिफ़्ल ने प्रश्न किया कि मुस्लमान देशों में अमन क्यों नहीं है?

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अमन इस लिए नहीं है कि उनके उल्मा और लीडर्ज़ क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा पर अनुकरण नहीं करते अभी क्लास के आरंभ में सूरत जुमा की तिलावत की गई है और इमाम महदी अलैहिस्सलाम की आमद के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस भी वर्णन की गई है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि एक ऐसा ज़माना आएगा कि इस्लाम का नाम के अतिरिक्त कुछ बाक़ी नहीं रहेगा। शब्दों के अतिरिक्त क़ुरआन का कुछ बाक़ी नहीं रहेगा। इस ज़माना के लोगों की मस्जिदें

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 02 June 2022 Issue No.22

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

वास्तव में तो आबाद नज़र आयेंगी परन्तु हिदायत से ख़ाली होंगी। लोग क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा को भूल जाऐंगे।

लोग अत्यधिक जाहिल व्यक्तियों को अपना सरदार बना लेंगे और उनके लीडर्ज़ अपने अपने ग्रुप और फ़िरक़े बना लेंगे और उम्मत फ़िर्क़ों में बट जाएगी। तो ऐसे ज़माना में अल्लाह तआला मसीह और महदी अलैहिस्सलाम को भेजेगा जो इस्लाह करने के लिए आएगा और इस्लाम की असली और हक़ीक़ी शिक्षा की ओर मार्गदर्शन करेगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भी फ़रमाया था कि उस की बात मानना और उसके पीछे चलना।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस आने वाले मसीह महदी ने फ़रमाया था कि यह समय तलवार चलाने का लड़ने का नहीं है इस्लाम का हक़ीक़ी संदेश पहुंचाने का है। आप ने फ़रमाया कि मैं तो दो कामों के लिए आया हूँ एक यह कि संसार अपने पैदा करने वाले रब को पहचाने और ख़ुदा तआला के हुक़ूक़ अदा करे और दूसरा यह कि हुक़ूक़ुल ईबाद की अदायगी की ओर ध्यान हो और इन्सान एक दूसरे के हुक़ूक़ का ख्याल रखें और एक दूसरे के भावनाओं का ख़याल रखें न कि एक दूसरे का विरुद्ध करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अतः ख़ुदा का हक़ अदा करेंगे और एक दूसरे का ख्याल रखेंगे तो अमन क़ायम होगा। यदि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नहीं मानेंगे तो अमन में नहीं रहेंगे। हाँ जो मान रहे हैं आप अलैहिस्सलाम को स्वीकार कर रहे हैं वह अमन में आते जा रहे हैं।

अतः असल बात यही है कि मसीह अलैहिस्सलाम को मानेंगे तो अमन में रहेंगे अन्यथा आपस में लड़ते रहेंगे।

एक बच्चे ने प्रश्न किया कि क्या क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत हर वक़त की जा सकती है। इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत तो हर वक़त की जा सकती है। परन्तु कभी कबार ऐसे हैं जिनमें नमाज़ पढ़ने से मना किया गया है। उदाहरण के लिए सूरज का तलूअ, ग़ुरूब और ज़वाल का समय है। इसी तरह नमाज़-ए-फ़ज्र के बाद से सूरज के तलूअ होने तक और नमाज़-ए-अस्र के बाद से सूरज के ग़ुरूब होने तक का जो समय है इस में नफ़ल नमाज़ पढ़ने से मना किया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बच्चों को संबोधित होते हुए फ़रमाया :

आप सब अपनी नमाज़ों को समय पर अदा करने का प्रयास करें।

एक बच्चे ने प्रश्न किया कि क्या क़ब्रिस्तान में क़ुरआन-ए-करीम पढ़ा जा सकता है। इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि क़ब्रिस्तान में जिन लोगों की डयूटी होती है और वह वहां अपने कर्तव्य की अदायगी के लिए मामूर होते हैं वह वहां क़ुरआन-ए-करीम पढ़ते हैं और पढ़ सकते हैं परन्तु किसी क़ब्र पर खड़े हो कर क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना यह उचित नहीं है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जब हम किसी क़ब्र पर खड़े हो कर दुआ करते हैं तो अपनी दुआ में सूरत फ़ातिहा और दूसरी दुआएं पढ़ते हैं और यह तरीक़ दरुस्त है। परन्तु किसी क़ब्र पर खड़े हो कर दुआ की बजाय क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करना और क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना यह दरुस्त नहीं है।

एक तिफ़्ल ने यह प्रश्न किया कि मैं वैज्ञानिक बनू या मुबल्लिग़ बनू इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि पंद्रह वर्ष की आयु के बाद फ़ैसला करना परन्तु यदि मुबल्लिग़ बनना है तो फिर अभी से फ़ैसला करो दो। दो ऑपशन नहीं हो सकते।

एक बच्चे ने प्रश्न किया कि पाकिस्तान के जो मौजूदा हालात हैं क्या वहां कोई बेहतरी आएगी?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

आप दुआ करते रहें। अहमदियों की दुआओं से ही आएगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

इस समय तो मौलवी हुकूमत पर सवार हैं। जो लीडर्ज़ उस समय बेहतरी लाने की प्रयास कर रहे हैं उनसे तो कुछ नहीं हो सकता। जो होगा वह अहमदियों की दुआओं से ही होगा। ख़ुदा तआला ने बेहतरी लानी है वह जानता है कि किस तरह लानी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

मौलवी के हाथ से मुल्क निकलेगा तो बेहतरी आएगी। हमारे मुक़द्दमात होते हैं तो जज बेबस होते हैं। कुछ नहीं करते कह देते हैं कि हमारे ऊपर मौलवियों का दबाव है इस लिए हम कुछ नहीं कर सकते। तो वास्तव में मौलवी हुकूमत कर रहे हैं। यदि इसी तरह स्थिति रही जो अब है तो फिर यह मुल्क अपने अंजाम को पहुँचेगा।

एक बच्चे ने प्रश्न किया कि जब आप बच्चे थे तो क्या आपको पता था कि आप ख़लीफ़ा बनेंगे। इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया। मुझे तो चुनाव से पहले तक ज्ञान नहीं था। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने फ़रमाया था कि कोई Sane Person इस बारे में सोच भी नहीं सकता। ख़िलाफ़त तो ख़ुदा तआला की ओर से आती है। अतः कोई इन्सान न इस बारे में सोच सकता है और न ही उसे कोई ज्ञान हो सकता है।

एक वक्फे नौ बच्चे ने प्रश्न किया कि वक़्फ़ नौ बच्चे बड़े हो कर किया बनें?

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मैं पहले ही अपने ख़ुतबात में और वक़्फ़ नौ के इजतेमाआत और क्लासेज़ के प्रोग्रामों में बता चुका हूँ कि मुरब्बी, मुबल्लिग़ बनें। डाक्टर, टीचर, इंजीनियर बनें। हमें वकील भी चाहिऐं। I.T स्पैशलिस्ट मीडिया इत्यादि के लिए भी चाहिऐं।

★ ★ ★

पृष्ठ01 का शेष

वे कमज़ोरियाँ जो हुसूल-ए-कमाल से वंचित करती हैं उनसे मुझे बचा ले। दरमयानी दर्जा के मोमिन के लिए यह शब्द इस्तिमाल होगा तो इस के यह अर्थ होंगे कि मेरी ख़ताओं को ढाँप कर मुझे उच्च प्रगतियों की तौफ़ीक़ दे और आम मोमिन यह शब्द इस्तिमाल करे तो यह मतलब होगा कि मेरे क़दम को ईमान पर इस्तिक़लाल से क़ायम रख। मेरे गुनाह मुझे कहीं ले न डूबें और एक मुतलाशी हक़ यह शब्द इस्तिमाल करे तो इस के यह अर्थ होंगे कि मेरे गुनाह मुझे हिदायत पाने से वंचित न कर दें इस लिए मेरे गुनाह माफ़ कर। इस लफ़्ज़ का इस्तिमाल मुख़्तलिफ़ अवसरों के लिहाज़ से ऐसा ही है जैसे जब्बार का शब्द है कि जब अल्लाह तआला के लिए आता है तो उस के माने मुस्लेह के होते हैं और जब यही शब्द बंदे के लिए आता है तो इस के माने सरकश और क़ानून तोड़ने के होते हैं। याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला अपने नबियों की निसबत फ़रमाता है اَللّٰهُ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ तो जब अल्लाह तआला उनको चुन लेता है तो फिर उनमें गुनाह कहाँ से आ सकता है। जब वे दुनिया से अलग करके ख़ुदा तआला के क़ुरब में बिठा दिए गए तो फिर उनके पास शैतान कहाँ से आएगा। शैतान तो ख़ुदा तआला के नाम से भी भागता है। इसी तरह दूसरी जगह फ़रमाया है اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ۔ मेरे बंदों पर निसंदेह तुझे कोई तसल्लुत हासिल नहीं। अतः जब क़ानून यह है कि जो अदना उबूदीयत के मुक़ाम पर हो अल्लाह तआला उसे भी शैतान के तसल्लुत से महफ़ूज़ रखता है तो अम्बिया अलैहिस्सलाम जो अल्लाह तआला की ख़ास हिफ़ाज़त में होते हैं उनके पास शैतान का गुज़र कैसे हो सकता है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 3, पृष्ठ 489 मुद्रित 2010 क़ादियान)

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad